मडर

सुभाष चंद्र यादव

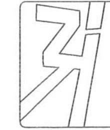


मडर
सुभाष चंद्र यादव

मडर

(उपन्यास)

सुभाष चंद्र यादव



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-81-951827-8-7
मडर

पहिल संस्करण (पेपरबैक) : 2021

मूल्य : 100.00 रुपए

प्रकाशक
अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
गाजियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फोन : 0-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

सौजन्य सहयोग
किसुन संकल्प लोक
किसुन कुटीर, सुपौल-852131 (बिहार)
फोन : +91-7004917511

आवरण चित्र : अनुप्रिया

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

MADAR (A Maithili Novel) by Subhash Chandra Yadav
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II
Ghaziabad-201005 (UP) India
Price : ₹ 100.00

साहित्य प्रेमी सम्राट आ नेहा लेल

मदन के माथ पर खून सवार छै। ऊ बेर-बेर राधा कए कहै छै, 'हे गै! तोरा हम काटि देबौ।' मदन कए तामस उठल रहल तँ ऊ अपन घरवाली कए गै कहै छै। प्रेम रहल तँ ये कहै छै। अखैन ऊ पितायल छै। दस बजइ लए चललै। ऊ भोर सँ भुखले छै।

राधा हाँइ-हाँइ ब्लाउज मे बटम लगा रहल छै। ब्लाउज सी कए गमहरिया वाली कए देतै तँ बीस गो टाका भेटतै। ओहि टाका सए चाउर आ अल्हू कीनत तखैन भानस हेतै।

मदन के धमकी सए राधा कए खौंत उठलै। भेलै कपार फोड़ि कए मरि जाइ। छाती मे हूक उठलै। आँखि पनिया एलइ। आँखिक झलफली मे हाथ बहकि गेला सए सुइया भोंका गेलै। अंगुरी सए खून फेक देलकै। अंगुरी कए ऊ मुँह मे लाए लेलक। एक मिनट राखने रहल। फेर बटम लगबय लागल।

मदन कए नै रहल गेलै। बाजल, 'भोंसरी! आइ भोर सए तोहर नाटक देखै छिऔ। बड़का टेलर मास्टर बनल-ए। हटा ओकरा। चुल्ही पजार।'

'हे रे, सरधुआ। हमर कोंढ़ खेबें? दू मुट्ठी सिदहा के उपाय नै आ मरद बनैए!' राधा खुखुवा उठल।

'हरमजादी! आबै छियौ घूरि कए। नै बनल रहलौ तँ बपहिया सए भेंट करेबौ।'

मदन अपन पुरुषार्थ कए भेटल चुनौती सहि नै सकल आ टरि गेल।

बटम लगायल भाए गेलै तँ राधा अपन जेठकी बेटी शनिचरी कए हाक देलक। शनिचरीक कतहु पता नै। कतय चैल गेलै छौंड़ी? हद्दो घड़ी अइ अंगना, ओइ अंगना केने घुरै छै। कहियो स्कूल गेल, कहियो नै गेल। आइयो स्कूल नै गेलै। की तँ भुखले नै जेबौ। शनिचरी आठ सालक छै। शनि दिन जनमल तैं सब शनिचरी कहय लागलै। दूसरा किलास मे पढ़ै छै। माय भोरे सए ब्लाउज सीबै मे लागल रहै। आइ शनिचरीए घर-आँगन मे झाड़ू लगेलक, चूल्हि निपलक, बरतन माँजलक। पाँच सालक करमू आइ उठिते खाइ लय कानय लागल। राति एक टा रोटी बचि गेल रहै। राधा ओही पर नून-तेल दाए कए तुतरू बना कए ओकरा पकड़ा देलकै। ऊ खाइते-खाइते अँगना सए निपत्ता भाए गेलै। कतौ खेलाइत हएत। ऊ स्कूल जाइ के गरे ने करै छै।

राधा फेर हाक देलकै, 'शनिचरी छें गे! गे शनिचरी!'

शनिचरीक कतौ थाह नै। अबितै तँ गमहरिया वाली कए ब्लाउज दाए कए पैसा लइत, चाउर-अल्हू बेसाहि कए आनइत। आब राधा की करय? अपने जाय? जँ घरवला देखि लेलकै तँ ओदबाद काए देतै। ऊ राधा कए कतौ जाय नै दै छै। ने ककरो सए गप करय दै छै। माथा मे संदेहक कीड़ा घुरघुराइत रहै छै।

पहिने एना नै रहै। गौना मे आयल तँ सब तरहत्थी पर

राखने रहै। सासु, ससुर, दीयर, ननदि सब बहुत मानैत रहै। घरोवला एको छन अलग नै रहय दै। घरक सब कोय काज करैत रहै आ ऊ घरवला संग घर मे घोंसियाअल रहैत छल। ओकरा बड़ लाज होइ। जाय चाहय तँ मदन पकड़ि लइ। ऊ प्रतिवाद करय, 'हय। छोड़ू ने। लोग की कहैत हेतै। अहाँ कए एको पैसा लाज नै होइ-ए!'

मदन एको बेर घर सँ नै निकलै। घरे मे खाइ, घरे मे पड़ल रहै। तकतान करैत रहै जे राधाक तेल-साबुन सठलै कि छै। मदन ओहि समय बी.ए. मे पढ़ैत रहय। एक बेर फीसक लाथे माय सए पैसा लेलक आ राधाक लेल मुलकी चीज कीनि आनलक। साबुन, गमकौआ तेल, अलता, क्लिप, हेयर बैंड, ब्रा, लिपिस्टिक। ब्रा पहिरबा कए देखलक। ओहि पर हाथ फेरलक। राधा कए बड़ लाज भेल रहै। मदन कए बहुत सख रहै। राधा कए बेर-बेर कहै, 'एक बेर लिपिस्टिक लगा कए देखाबौ ने।'

राधा किन्नहु तैयार नै भेल, 'धुर! राति कए लिपिस्टिक लगा कए की हेतै? के देखतै?'

'हम देखबै। लगाबौ ने।' मदन जिद धेने रहै।

लेकिन राधा टस सँ मस नै भेल। ओकर मान राखै लेल कहलकै, 'जनमअठमीक मेला मे लगेबै।'

राधा नहिरा चैल जाइ तँ मदन कए सब चीज सुन्न आ उदास लागय लागै। कतौ कोनो चीज मे मन नै लागै। ऊ खाली राधाक बारे मे सोचय। मन ओकरे पर टाँगल रहै। सासुर जाय चाहय। माय सए पाइ माँगै। माय पुछै, 'की करबिही?' तँ कहै, 'किताब लेबै।'

'अखैन हाथ पर पाइ नै छै। मूंग टुटतै तँ बेच कए देबौ।' माय कहै।

'तब पढ़बै केना! बिना किताबे के पढ़बै?'

माय कोनो जवाब नै दै। ककरो सए पैंच-उधार भेट जाइ तँ लाए कए दाए दै। पाइ भेटिते मदन फिरार। माय कए समाद पठबा दै जे ऊ तिनटोलिया जाइ छै। तिनटोलिया मदन के सासुर रहै। सासुरो जाइ तँ ओतय सए टरै के नाम नै लइ। दस दिन, पनरह दिन जमल रहै। राधा दिन मे स्कूल चैल जाइ तँ ऊहो स्कूलक बाहर चक्कर लगबैत रहय। राधाक सखी सब चौल करइ, 'कोन जादू-मंतर काए देलही-ए रधिया!'

राधा लाजें गड़ि जाइ, 'धुर! बताह छै, बताह।'

ओकर एते-एते दिन सासुर मे रहनाइ राधा कए नीक नै लागै। लोक की सोचैत हेतै! राधाक माय-बाप कहै तँ किछु नै, लेकिन बुझाइ जे मदनक एहि छिच्छा सए ओहो सब अकच्छ छै।

राधा मैट्रिकक परीक्षा देत। मदनोक परीक्षा लगिचायल छै। एक दिन राति कए राधा बहुत बुझेलकै। परीक्षे धरिक तँ बात छै। तकर बाद तँ दुनू संगे रहत।

मदन की बुझलक, कतेक बुझलक तकर थाह राधा कए नै भेटले। लेकिन ऊ रुसि गेल, मुँह फुला लेलक आ अपन गाम घुरि गेल।

मदनक बाप कामेसर अपन जमाना के इंटर पास। ओहि समय कम्मे लोग पढ़ै। उहो बेसी नै पढ़लक। इंटरे काए कए छोड़ि देलक। कामेसर बड़ दुलारू। नीक-निकुत खाइ, नीक-नीक पहिरइ आ निफिकिर भेल दोस महिम संगे घूमल घुरय।

अपन उपनाम राखने रहय 'आजाद'। ओहि समयक कओलेजिया लड़का सभ मे उपनाम राखै के फैशन रहै। दीवाना, मस्ताना, अकेला, अलबेला सन कोनो उपनाम राखय। उहो राखि लेलक आ भाए गेल कामेसर 'आजाद'। ऊ ठीके आजाद रहय। बाप-पित्ती जरे रहै। पचास-साठि बिगहाक जोतदार। कलम-गाछी, पोखरि, गाय-महींस, हरवाह-चरवाह, नौकर-चाकर, दाइ-नौड़ीक कोनो कमी नै। ओकरा पर कोनो जिम्मेदारी नै। पढ़य आ स्वच्छन्द घूमय। ओही समय मे धनीक परिवारक एक टा गोर आ सुन्दर लड़की सए ओकर बियाह भाए गेलै। बियाहक बाद ऊ पढ़ाइ छोड़ि देलक। चाहितय तँ स्कूलक मास्टरी भेटि जाइतिए। लेकिन चाकरी कए ओहि समय अधम बूझल जाइ। आ जँ बैठले-बैठल सब चीज भेटैत रहैक तँ किए किछु करैत।

लेकिन सब दिन एक रंग नै होइ छै। कामेसरक पित्ती जे मालिक रहै, बेराम पड़ि गेलै आ संसार तेआगि देलकै। तकर बाद सब भिन भाए गेल। कामेसरक हिस्सा मे पाँच बीघा जमीन पड़लै। परिवारक भार पड़लै तँ कामेसर कए नौकरी करबाक चाँकि भेलै। नौकरी शुरू तँ केलक, लेकिन टिक नइँ सकल। औपिसक ताबेदारी ओकरा सहल नै गेलै। ऊ हाकिम सए झगड़ा काए लेलक आ काम पर जेनाइ बंद काए देलक।

आब पाँच बीघा मे छह आदमी के खरचा रहै। दू टा बेटी, दू टा बेटा आ दुनू परानी अपना। बेटी सभ गामेक इसकूल मे सतमा तक पढ़लकै। बेटीक बियाह मे कामेसरक एक बीघा जमीन बिका गेलै। चारि बीघा बटाइ पर लागल छलै। कामेसर कोनो काज नै करै छल। बाड़ी-झाड़ी मे किछु साग-सब्जी उपजा लैत छल।

एक टा सामाजिक काज मे कामेसर कए खूब मन लागै।

रोगी के इलाज करबेनाइ। कोन रोगी कए कोन डाक्टर लग आ कत' लाए गेनाइ नीक हेतै से कामेसर खूब जानैत रहय। ओकरा कतेको डाक्टर सँ परिचय रहै। गाम मे आ सर कुटुम मे कोय बेमार पड़ै तँ कामेसर कए पकड़य। कामेसर रोगी कए डाक्टर लग लाए जाइ, ओकर जाँच करबाबय, रिपोर्ट आनय, दबाइ कीनि कए आनि दै, रोगी कए समय पर दबाइ आ पथ खोआबै। रोगी जाधरि ठीक नै भाए जाइ कामेसर ओकर संग रहै। ऊ पेट मे जे खाइ सएह टा रोगीक और कोनो चीज ऊ नै लै।

कामेसर जेना-तेना दुनू बेटा कए बी.ए. धरि पढ़बौलक। छोटका बेटा होशियार रहै, अपन बिजनेस शुरू केलक। लेकिन जेठका मदन कोनो ढंग के किछु नै काए सकल। थोड़े दिन बीमाक काज केलक। साल दू साल सर-कुटुम आ दोस-महिम सए बीमा भेटैत रहलै। तकर बाद ठप पड़ि गेलै। मदन मे ओहन बुधि आ हुनर नै रहै जे ओकरा चला सकितय।

ओकरा फुराइते ने रहै जे आब की करय। ऊ बम्बइ भागि गेल। ओतय कोनो फैक्ट्री मे किछु दिन काज केलक। लेकिन ओतेक खटनी ओकरा बुते पार नै लागलै। घर मन पड़ै, राधा मन पड़ै। एक दिन ओतय सँ पड़ा कए ऊ गाम चैल आयल।

गाम मे राधा नै रहै। नहिरा चैल गेल रहै। छोटका भाय किशोरक कनियाँ आबि गेल रहै। बीच-बीच मे किशोर भिन हेबाक बात उठबय। माय-बाप कान-बात नै दै, मटियेने रहै। मदन बम्बइ सँ घुरल तँ गाम मे दू-चारि दिन खूब मन लागलै। लोग कए बम्बइ के खेरहा कहने फिरल।

लोग पूछै, 'कमा कए कते आनलिही?'

त' मदन कहै, 'कमाइ तँ होइतइ, लेकिन रहलिऐ कहाँ। रहितिऐ तब ने।'

कोय पूछि दै, 'कोन काम करैत रही?' तँ ओकरा साँच कहइ मे लाज होइ। कहै, 'हिसाब-झाड़ी देखैत रहिऐ।'

एक गोटय पुछलकै, 'हीरो-हीरोइन सए भेंट भेलौ?'

'ओह! की कहिअह! एक दिन अझक्के देखलिऐ। रस्ता-पेड़ा चलिऐ तँ हीरोए-हीरोइन कए ताकने फिरिऐ जे कतहु देखा जाइ। से कहै छिअह एक दिन लाल बत्ती लग ठाढ़ रहिऐ। एगो कार आबि कए रुकलै। शीशा देने देखलिए अरे! ई तँ हेमामालिनी छिऐ। एकदम वएह छिऐ। जा कने और देखितिऐ ता बत्ती हरा भाए गेलै। आ कार सर्र सिन निकलि गेलै।' मदन बड़ा रस लाए कए सुनबैत रहलै।

ओकरा होइ जे एहू सँ बेसी मजा राधा कए सुनबै मे एतै। ओकरा सब बात विस्तार सँ कहत। ओहो एक-एक टा बात बिटिया-बिटिया कए पुछतै। लेकिन ऊ सासुर जायत केना? ओकरा जिम्मा मे एक्को टा पाइ नै छै। सब खतम भाए गेलै। ऊ माय कए कहलक। माय बिगड़ि गेलै, 'कमा कए ला, आ जे केनाइ छौ से कर। हमरा पैसा नै अय जे छिछिआइ ले देबौ।'

मदन के मुँह अपन सनक भाए गेलै।

ऊ घड़ी बन्हकी लगेलक आ सासुर चैल गेल। आठ बजे राति मे तिनटोलिया पहुँचल। दरबज्जा पर ससुर रहै। बम्बई दिआ पुछलकै। ओतय कोन काज करैत रहय? कतेक दैत रहै? आब कहिया जायत?

अइ सब के जवाब दै मे मदन कए मन नै लागि रहल छलै। ओकर ध्यान अंगना दिस रहै। आधा घंटा भेलै, मगर कोय

एक लोटा पानियो लाए कए नै एलै। ओकरा छगुन्ता होइत रहै।

'सब सिनेमा गेलै। थम्हू पानि लेने आबै छी।' ससुर बाजलै तब बुझेलै जे एतेक सुनसान किए छै। की ससुर असकरे घर पर छै? के के सिनेमा गेल छै? मदन के दिमाग मे सवाल पर सवाल आबय लागलै। ओमहर आँगन मे मदनक सासु भानस काए कए राखि देलकै आ डेढ़िया पर आबि कए खखास करय लागलै। खखास सुनि कए ससुर अंगना दिस गेलै। घूरि कए अयलै तँ मदन कए कहलकै, 'मेहमान! चलू खा लिअ। ऊ सब कखैन एतै, कखैन ने। ता खाना ठंढाय जेतै।'

मदनो भुखाय गेल रहय। चैल देलक। खा कए दरबज्जा पर चैल आयल। निन्न नै होइत रहै। रहि-रहि कए राधा पर पित्त उठै। ऊ किए गेल? ककरा संग गेल?

ऊ सब बड़ी राति कए घुरलै। खाइत काल जे गपसप होइत रहै से तँ मदन कए नै बुझेलै, लेकिन हँसी सए पकड़ि लेलक जे के के छै। एक टा ओकर जेठ साढ़ू आ दोसर राधा रहै। ऊ दुनू भरिसक सिनेमाक कोनो सीन पर हँसैत छलइ। लेकिन मदन के देह मे आगि लागि गेलै। ओ पड़ल-पड़ल सुनगैत रहल। ओकरा भेलै राधा रभसि गेल छै। ओकर रभसल हँसी दिमाग पर हथौड़ा जकाँ चोट करैत रहलै।

कने कालक बाद साढ़ू अयलै। कहलकै, 'राधा डेढ़िया पर ठाढ़ छै। बजेलक-ए। जइयौ।'

मदनक मन भेलै जे कहि दै, 'अहीं चैल जाउ। अयबे किए केलौं। केहन तँ रंग-रभस करैत छलहुँ। राति भरि करितहुँ।' लेकिन कहि नै भेलै। गुम्हरैत विदा भेल।

राधा डेढिया लग ठाढ़ छलै। लग आबिते हुलसि कए

पुछलकै, 'हमरा ले बम्बइ सँ की सब आनलकै अय?'

मदनक मन लोहछि गेलै। बाजल, 'एकरा दै वला के कमी छै? कोय सिनेमा देखेतै। कोय तेल-साबुन देतै। कोय सोना-चानी देतै। रंग-रभस ओहिना होइ छइ?'

'हे! हमरा ई सब नै कहौ।'

'तब ककरा कहबै? सती सावितरी केँ?'

'हम ओहन नै छी। हमरा ई सब ने सोहाइ अय।'

'खाली सिनेमा सोहाइ छै। ठिठिएनाइ सोहाइ छै!'

'लोग मुँह सी लेतै! हँसबो-बोलबो नै करतै?'

'अनका संगे सिनेमा किए गेलै?'

'बहनोइ आन भेलै? कोनो की हम असकर गेल रहिऐ। छोटका भाइयो तँ संगे रहै।'

दुनू बिछौन पर चैल गेल। मदन पड़ि रहल। राधा मुँह फुलेने बिछौनक कात मे बैठल छल। दुनूक बीच बड़ी काल धरि चुप्पी पसरल रहलै। मदन सोचैत रहय राधाक मन साढ़ू पर टाँगल छै। ओ सिनेमा, ओ हँसी-ठहाका। राधा ओकरे चकभाउर दाए रहल-ए। ओही मे मगन-ए। ओकरा जेना मदन के कोनो बेगरता नै होइ। राधा सोचैत रहय जे मदन कतेक निसोख आ केहन घुन्ना छै। ऊ बहनोइ संगे सिनेमे चैल गेल तँ की भाए गेलै! लोग बहनोइ संगे हँसी-ठट्ठा नै करतै तँ ककरा संगे करतै!

अपन संदेह आ राधाक मानक कारणें मदन केँ बुझाय लागलै जेना ई राति एहिना भारी आ जबदाह भेल गुजरि जेतै। एतेक कठिन सए जे ओ आयल से अकारथ चैल जेतै। ओकरा

भान भेलै जेना कतेक ने कुकूर एक संग कानब शुरू काए देने हो। ऊ हाथ बढ़ा कए राधा कए अपना दिस घिचलक। बर्फ भेल राधा हाथक ताप सए पिघलल आ बिछान पर पसरि गेल। ओहि बेरक सासुरवास मदन लेल आनंददायक नै रहलै। ओहि पर सिनेमा आ हँसी-ठट्ठाक छाया डोलैत रहलै। ओकर साढ़ू भोरे चैल गेलै। ऊ दू दिन और रहल। राधा संगे जतेक बेर गप्प होइ ततेक बेर यैह पूछै जे साढ़ू कहिया एलै, सिनेमा देखैत काल ओ कत' बैठलै, ओकरा संगे कोन-कोन गप केलकै। मदनक संदेह सँ राधा खिन्न भाए गेल। मदन जेबा लेल तैयार भेल तँ राधा रुकबाक कोनो आग्रह नै केलकै।

मदन गाम चैल आयल। लेकिन राधाक रंग-रभस ओकर मन केँ व्याकुल केने रहलै। ऊ माय केँ कहलक, 'बाबा कए कही तिनटोलिया वाली के विदाइ करा कए लाए आनतै।'

किछु दिन धरि विदागरी वला बात कए कामेसर मटियेने रहल। मदन बेर-बेर माय कए हुरकुच्चो दै। आजिज भाए कए कामेसर तिनटोलिया गेल आ पुतहु कए लाए आनलक। एहि बेर राधा सासुर आयल तँ घर-आँगन के सब टा काज सम्हारि लेलक। फेर शनीचरी भेलै, करमू भेलै। लेकिन मदनक संदेह खतम नै भेलै। ऊ राधा पर पहरा दैत रहय। राधा कत' जाइ छै, ककरा सँ गप करै छै, ककरा सँ हँसी-मजाक करै छै—मदन एहि सबके हिसाब राखय। राधा सँ कैफियत तलब करय—की गप केलक, हँसल किएक? ओकर संदेह आ जिरह सँ राधा तंग भाए गेल। एक दिन मदन कए कहलक, 'एना करतै तँ हम नै रहबै।'

राधाक एहि बात पर मदन तरंगि गेल, 'हे गै बपचोदी! जो तँ देखियौ कोन यार लग जाइ छिही।'

राधाओ केँ नै रहल गेलै। बाजल, 'जेबै तँ तू की काए लेबही।'

'देखबिही?'

'हँ, देखबै।'

'ठहर बपचोदी! आइ देखाइए दै छियौ।'

मदन कतहु सँ एक टा पेना आनलक आ राधा के डेंगबे लागल। राधा चिचिआयल, 'हौ बाप! मारि देलक' हौ!'

सौंसे अँगना लोग जमा भाए गेलै। मदन कय पकड़लक। ओकर पेना छिनलक। राधा कानैत रहल। तकर अगिले दिन राधा भागि गेलै। मदन माय कय कहलक—'हम सब खेल-बेल बुझै छिऐ। मौगी के मजाल नै रहै जे भागि जइतइ। ओकरा घरे के लोग साहलकै। ई किशोरबा जे छौ किशोरबा। ई ओकरे किरदानी छिऐ। वैह सिखेलकै-पढ़ेलकै। ओकरा अलग कर। हम ओकरा जरे नै रहबौ।'

'हे रौ। ऊ की केलकौ। बलौं आगि नै उठाबिऐ। जेहने तू छिही, तेहने तोहर मौगिओ छौ।'

'हँ गे! तू तँ ओकर पाट लेबे करबिही ने। दुलरुआ छियौ ने।'

'हे रे, जनमलखौका! ओकर की केलियै आ तोहर की नै केलियौ रे!'

'बेसी बात नै बना। हमरा भिन काए दे।'

'आबय दही बपहिया कए। काए देतौ भिन।'

मदन आ किशोर दुनू भाइ भिन भाए गेल। माय-बाप किशोर जरे रहल। मदन असकर भाए गेल। राधा भागि कए

नहिरा चैल गेल रहै। शनीचरी आ करमू सँ मदति लाए कए मदन कहुना आश्रम चलबैत रहल। एक बेर तिनटोलिया सए राधा केँ आनय गेल। राधा भेंटो नै केलकै। मदन अपमानित आ निराश भए धूरि आयल। ससुर कहलकै, 'हमर बेटी जाइ ले तैयार नै अय। अहाँ नीक सँ नै राखै छिऐ। मारै-पीटै छिऐ।'

मदन सासुरक सब टा तामस माय आ धीयापूता पर उतारलक। माय केँ कहलकै, 'तोरे सभहक करनी सँ ई सब भेलै। कही जा कए आनतौ। ने तँ सब करम काए देबौ।'

शनीचरी आ करमू केँ मार' दौड़ल, 'तोंहू दुनू भाग। एतय की करै छिही। छिनरनियाँ गेलौ आ तोरा दुनू केँ हमर कपार खाइ ले छोड़ने गेलौ। भाग, तोंहू दुनू भाग।'

ऊ दुनू निच्छोह भागल। मदन पकड़ि नै सकल। पकड़ि लैत तँ ओदबाद उठा दितिऐक।

साँझ पड़लै तँ शनीचरी आ करमू डरे दादीक पजरा लागि कए बैठि गेल। मदन केँ कोय कहि देलकै, 'काल्हि देखलियौ करमूआ मिथिलेशक दोकान मे गहूम बेचैत रहौ। गहूम बेचि कए फुकना किनलकौ।'

मदन तखनिए सँ करमू कय ताकि रहल छै। अँगना आयल तँ ओकरा दादी लग सुटकल देखलकै। डेन पकड़ि कए घिचलक आ दे लप्पड़ दे लप्पड़, 'मादरचोद!' फुकना कीनत। गहूम बेचि कए फुकना कीनत। निकाल साला, निकाल। कहाँ छौ फुकना, निकाल।'

'हौ बाप! फूटि गेलै हौ।'

'फूटि गेलै! सार! आइ तोरो फुकने जकाँ फोड़ि देबौ!'

'माय गे माय! छौड़ा केँ मारि देलकै गे माय!' दादी चिचिआयल आ पोता केँ पाँज मे नुका लेलक। हल्ला सुनि कए लोग जमा भाए गेलै आ मदन केँ पकड़ि लेलकै।

लोक केँ जेना सफाइ दैत मदन बाजल, 'साला, दूरि भेल जाइ छै हौ। कहियो गहूम बेचत, कहियो चाउर बेचत। फुकना कीनत तँ चॉकलेट कीनत।'

मदन केँ फेर जुआरि उठलै। छौंड़ा दिस दौड़ल, 'बोल! फेर बेचबिही?' आ एक चाट देलक।

छौंड़ा चिचिया उठल, 'आब नै बेचबै हौ बाप!'

मदन बड़ कठिन सँ एक मन गहूम के जोगाड़ केने रहय। कलम मे आड़ा पर एगो शीशो सूखि गेल छलै। शीशो पातर रहै। चारि-पाँच सालक रहल हेतै। मदन एक टा गहिकी ताकलक। ओकरा सँ दाम-छाप तय केलक। बेना पकड़ि लेलक। लेकिन छोटका भाइ किशोर अड़ंगा लगा देलकै। कहै जे एक हजार मे नै बेचब, डेढ़ हजार मे बेचब। गहिकी भड़कि गेलै। बेना आपस लाए लेलकै। मदन फेर दोसर गहिकी भजिऔलक। एहू बेर किशोर संगे बहुत टंटा भेलै। तब जा कए बारह सय मे गाछ बिकेलै आ मदन एक मन गहूम कीनि सकल।

मदन बहुत चिंता मे रहैए। ओकर घर छिड़िया गेल छै। छह महीना सँ राधा नहिरा मे छै। आबै के गर नै करै छै। मदन एक बेर फेर तिनटोलिया गेल छल। पितिया ससुर लग पहुँचल। ओकरे लग खेलक-पीलक। राति मे ओहीठाम सूतल। पितिया ससुर केँ दुख-तकलीफ सुनेलकै। घर रंडभंड भेल जाइ छै। धीयापूता बिलटल जाइ छै। घरनी घर डेबतै तब ऊ दू पाइ के उपाइत करत। अखैन तँ भनसो ओकरे करय पड़ै छै। धीयापूता

के तकतान कर' पड़ै छै। छुट्टिये ने होइ छै जे घर सँ निकलत आ कमाइ के कोनो बेंत करत।

पितिया ससुर बोल-भरोस देलकै, 'अच्छा थम्हू। गप करै छिऐ।'

मदन केँ नै रहल गेलै तँ टहलि कए ससुरक दरबज्जा पर गेल। ससुर टेरूआ पर सुतरी तैयार करैत रहै। मदन जा कए गोर लागलकै। मगर ससुर किच्छु नै बाजलै। बैठेयो ले नै कहलकै। मदन बड़ी काल ठाढ़ भेल रहल। अंगनो सँ कोय नै निकललै। ऊ घूरि आयल। पितिया ससुर सुनेलकै, 'दूल्हा। अहाँ घूरि जाउ। अहाँक कहने विदाइ नै करत। समधि केँ पठा देबै।'

मदन अपन गाम घूरि आयल। बाप केँ सब बात कहलकै। 'अच्छा, जेबै।' बाप भरोस देलकै। मदन आस-पेरा देखैत रहल जे आइ जेतै, काल्हि जेतै। लेकिन कतेक आइ-काल्हि बीति गेलै। ओकर बाप जाइ के नामे नै लै छै। मदन जा कए माय केँ कहलक, 'हे गै। कही जा कए विदाइ करा आनतौ। नै गेलौ तँ सब चीज केँ चूरि देबौ।'

'हे रे! एना अगुताइ छिही किए? जेबे ने करतौ।'

'सएह कहि देलियौ।'

एहन नै रहै जे कामेसर अपन जेठका बेटाक बारे मे किछु नै सोचैत हो। लेकिन मदनक विचार-व्यवहार कामेसर कय पसिन नै। तिनटोलियावाली संगे चलैत उतराचौरी सँ ऊ अकच्छ रहै। गारि-मारि कोन जनानी कय नीक लागतै। पछिला बेर जे ऊ विदाइ करबै लय गेल छल से कोन-कोन धरानी आ ककर-ककर खेशामद काए कए विदाइ भेल रहै से कामेसर जानैए। तैं ओकर मन नै करै छै जे जाइ। बड़ गंजन होइ छै। बहुत

अपमान सहय पड़ै छै। कामेसर काल्हि पंडित सए दिन तकेने रहय। अखैन भदवा छै। पाँच दिन मे उतरि जेतै, तब जायत। लेकिन मदन केँ धैरज नै छै। माय केँ बेर-बेर खोचारन दै छै 'गै कहिया जेतौ?'

माय केँ खीस उठलै, 'रे! तोरे टा बौह छौ कि और ककरो छै? एना कहौं लोग बौह लय व्याकुल रहय!'

भदवा उतरि गेलै। लेकिन कामेसर तिनटोलिया नै जा सकल। बलतोड़ भाए गेलै। ओही टोपे बोखार लागि गेलै। बोखार तँ दू दिन मे उतरि गेलै लेकिन कमजोरी बुझाइत रहै। सोचलक पाँच-सात दिन मे सकतायत तँ चैल जायत। लेकिन मदन बात बूझइ वला लोक नै। ओकरा भेलै बाप बहाना बना कए टारैए। ऊ उत्पात शुरू केलक। घर मे राखल बक्सा उठेलक आ अँगना मे पटकि देलक। एगो छोटका टेबुल पटकि देलक। थारी पटकलक, लोटा पटकलक, छिपली पटकलक। घरक पूरा सामान केँ तहस-नहस काए देलक। माय देखलकै तँ चिचिआयल, 'हे रौ! आँती उछललौ अय? एना मतिछिन्नू जकाँ किएक करैत छिही?'

पड़ोसिया कमला देखलकै तँ नै रहल गेलै। बाजल, 'दुइए सटका मे सब बतहपनी घुसड़ि जेतै।'

मदन फानल, 'हे रौ, सार कमला! तू मारबिही? छौ पावर?

'साले, गारि पढ़ल' तँ जी खैंच लेबह।'

'रे कमलाक सार! देखबिही?'

'साले, एक्के लाठी मे सरंग तका देबह!'

मदन कमला दिस दौड़ल। कमला जा बूझि सकितय जे

मदन किएक दौड़ल अबै अय ता कमलाक कान पर मदन हबक्का मारलक आ मुँह मे कान लेनहि पड़ायल। सोनितक टघार देखि कए कमला कय गश आबि गेलै। ओकर कनियाँ, धीयापूता बपरहाटि काटय लागल।

मदन पड़ा गेल। कत' गेल ककरो पता नहि। भरि गाम आ पूरा परोपट्टा मे ओकर कनकट्टीक खिस्सा पसरैत रहल। एहन जुलुम बात कोय ने सुनने रहय। कमला केस काए देलकै। बहुत दिनक बाद एक दिन राति कए मदन गाम घुरल। बाप कामेसर बहुत बात-कथा कहलकै। पुलिस आबि कए बहुत तिरिंग-भिरिंग देखेने रहै। दू-तीन सौ टाका दाए कए कामेसर पुलिस कय शांत केने रहय। अगिला दिन मदन घरक बाहर निकलल तँ ओकरा कोय ने टोकलकै। ऊ लोगक आँखि मे डर आ घिरना देखलक। कमला केँ देखि कए ओकरा भय भेलै।

एक दिन मदन रस्ता धेने जाइत रहय तँ अनचोके सुनलक, 'कनकट्टा!' ऊ चारूभर हियासलक जे के रहय! 'कनकट्टा'! अइ बेर मदन सहचेत रहय आ ओकरा बुझा गेलै जे कोनो अगत्ती छौंड़ा ओकरे कुढ़बै ले कहि रहल अय! 'के छिअय रे?' कहैत ओकरा खेहारलक। लेकिन छौंड़ा कोन गली बाटे कतय चैल गेलै से मदन कय थाह नै लागलै।

मदन के धीयापूता बेवहम भेल जाइ छै। शरीचरी आ करमू स्कूल नै जाइ छै। पता नै भोरे सँ कत' बहटल छै। मदन केँ बड़ भूख लागल छै। ऊ चूल्हि पजारि खापड़ि मे कने टा चाउर भुजलक आ खाय लागल। खाइते रहय ता शनीचरी आ करमू पहुँचलै। दुनू थाल मे लेटायल। शनीचरीक हाथ मे भरि पन्नी डोका रहै, जकरा ओ अँगना मे उझलि देलक। दू-चारि टा बड़का डोका, गरइ गरचुन्नी, बाकी सब छोटका डोका।

शनीचरी चक्कू लाए कए डोका के गुद्दा निकाल' लागल। करमू आबि कए मदन लग ठाढ भाए गेल आ भुज्जा पर टकटकी लगा देलक। मदन बिगड़लै, 'पहिने गोर-हाथ धोबय की!'

बचलहा भूजा छोड़ि मदन उठि गेल। उहो डोका बनबै मे लागि गेल। डोका बहुत छोट-छोट रहै। ओकर गुद्दा निकालै मे आध पहर दिन बीत गेलै। ओकरा धो धा कए शनीचरी मसल्ला पीस' लागल। ने मरीच रहै, नै जीरा रहै आ नै पिआउज। बस कचका मरचाइ, धनिया आ रसून। शनीचरी लोहिया चढ़ेलक। करू तेल कम्मे रहै। तेल-मसल्ला मे डोका भूजि पानि देलक आ आँचय लागल। डोकाक माउस जल्दी नै सीझै छै। आध पहर धरि आँच दैत रहल। शनीचरी नहाइ ले चैल गेलै तँ मदन आँच उसकाबय लागल। आइ-काल्हि शनीचरी रोज गाछी-बिरछी आ डबरा-पोखरि मे बौआइत रहैत छै। जारनि, डोका, कांकोड़ आ गरइ-पोठी झोहने फिरै अय। लोक कहै छै शनीचरी बिगड़ि गेलै।

विदागरी वला बात कनकट्टा कांड मे दबि गेलै। मदन केँ राधा मन पड़ैत रहैत छै। ओकर बात-बेबहार, हँसी-ठट्ठा, गारि-मारि मन पड़ैत रहैत छै। ओकर रंग-रभस मन पड़ैत छै तँ मदन बेचैन भाए जाइ अय। राति-राति भरि निन्न नै होइ छै। घरक हालत ठीक नै छै। एक्को पैसाक ठहार नै छै। नूनो-तेल अनाजे बेचि कए आबै छै। ऊ चाहै छै किछु करय। लेकिन की करय से नै फुराइ छै। किछु गोटय सँ पुछबो केलक। कोय कहलकै गाय पोसि ले, कोय कहलकै अनाजक खरीद-बिक्री कर। ऊ विचारैत रहल। दुनू काम ओकरा भारी आ झंझटिया बुझेलै। पुंजियो बहुत चाही। कत' सँ आनत? ओकर मन होइ छै एकबेर पीसा सँ भेंट करय। पीसा बहुत धनिक छै। टेक्टर छै, मेक्सी

छै। पीसा कोनो ने कोनो गर धरा देतै। ऊ पीसा सँ भेंट केलक। दुखनामा कहलकै। ककरो टेम्पो बहुत दिन सँ परता रहै। दू-तीन हजार लगेला सँ टेम्पो चल' लगितै। पीसा मदन कें टेम्पो के जोगाड़ काए देलकै। शर्त ई रहै जे मदन एक सय टाका रोज मालिक कें दैत रहतै। टेम्पो वला काज मदन कें खूब पसिन भेलै। अइ काज मे भीर कम रहै। एक टा तिनकठवा कोला सूदिभरना राखि मदन टेम्पो ठीक करेलक। एक-दू दिन टेम्पो चलायब सिखलक। आ तेसर दिन सँ भाड़ा कमाय लागल। टेम्पो सिपौल सँ पिपरा आ पिपरा सँ सिपौल चलै। दू सय-तीन सय रोज कमाइ भाए जाए। घर रस्ते मे पड़ैत रहै। कोनो काम रहै तँ पाँच-दस मिनट टेम्पो रोकि, काए लेल करय। मालिको कें रोज एक सय टाका दाए दै।

कामेसर कें बुझेलै जे आब मदन सुधरि गेल। आब विदागरीयो भाए जेतै। ऊ तिनटोलिया पहुँचल। समधि कें बुझेलकै जे मदन आब कमासुत भाए गेल-ए। हालत बदलि गेल छै। आब बेटी कें कोनो तकलीफ नै हएत, जाय दिऔ। आ राधा चैल आयल।

राधा टेम्पो वला धंधा सँ बहुत उत्साहित रहय। जीअइ के उमंग आ जोश आबि गेल रहै। बढ़ियाँ खाय पहिरय लागल। राधा सिंगार पेटार करय। फुरसत मे अड़ोसनी-पड़ोसनी सँ गपशप करय। एहि सँ बढ़ि कए आनंद और की हेतै?

लेकिन माय एक दिन मदन लग चुगली काए देलकै, 'तू भरि दिन टेम्पू पाछू बेपिरीत रहै छिही आ बौह बनि-ठनि कय अँगने-अँगने छिछिआयल फिरै छौ। ओकरा सैंत, नै तँ नाक कटा देतौ।'

मायक बात सुनि कय मदन कें लहरि उठि गेलै। जा कए राधाक झोंटा पकड़लक, 'गे छिनरिया! बोल ककरा लग जाइ छिही? के छियौ यार? बपचोदी, जल्दी बोल।'

मदन केश तेना भुटिया कए पकड़ने रहै जे राधा के बुझेलै जेना केश संगे माथक गुद्दियो निकलि जेतै। ऊ चिकरल, 'रे मयचोदा, केश छोड़ ने रे।'

गारि सुनि मदन तामसे बहीर भाए गेल। राधा कें धकेल कए गिरा देलक आ एँड़ासय लागल। पेट मे एँड़ लगला सँ राधा निसुआ गेल। मदन कें डर भेलै मौगिया मरि ने गेल होइ। ऊ टेम्पू लाए कय निकलि गेल। राधा मरल नै रहै। बेहोश भाए गेल रहै। पानिक छिट्टा देला पर होश मे आयल। जा कए बिछौन पर पड़ि रहल। गत्तर-गत्तर दुखाइत रहै। अइ सँ नीक मिरतू। ओकरा होइ जा कय रेल मे कटि जाय।

मदन टेम्पू लाए कए निकलल तँ एक टा पसिंजर सँ रे-बे केलक, दोसर सँ धक्का-मुक्की केलक। एक टा साइकिल वला कय ठोकर मारलक आ जे कमेने रहय से जरिमाना भरलक। ओकरा रहि-रहि कए बौह पर खौंत उठइ। मन करइ जा कए कुट्टी-कुट्टी काटि दइ।

ऊ अबेर कए घुरल। सेहो छुच्छे हाथे। घर अन्हार रहइ। ओकरा बुझेलै जेना चौकी पर कोय पड़ल होइ। मौगिए हेतइ। छौंड़ा-छौंड़ी के कोनो पता नइँ। भरिसक दादी लग सुतल होइ। मन भेलइ जा कए एक सटका खींच लिअय। सब सुतनाइ बहार काए दइ। लेकिन ततेक ठेहिआयल रहय जे चौकी पर पड़ि रहल आ निन्न पड़ि गेल।

भोरे माय जगेलकै, 'हे रे! सुतले रहबिही? ओनय बौह

उढ़ड़लौ कि भागलौ, ताकही गे ने। हम तँ सगरे बौआ एलिअइ। कतौ नइँ भेटलै।'

मदनक छाती धक सिन उठलै। माथा सुन्न भाए गेलै। मौगिया नहिरे गेल हेतै। पचबजिया गाड़ी पकड़ि लेने हेतै। लेकिन के कहलक-ए। रेले मे कटि गेल होइ।

मदन सोचैत रहल जे की करी। ओकरा बुझेलै जे पहिने ओइ मौगिया के जतय-जतय अड्डा रहइ ततय-ततय खोज कएल जाय। ओकर एक टा अड्डा अशोकबा के अँगना रहइ। अशोको कए ओकर कनियाँ छोड़ि देने छइ। नहिरे मे रहइ छइ। तीन साल के एगो बेटी छै। अशोक कतेको बेर विदाई करबय सासुर गेल। कनियाँ आबइ लए तैयार नइँ भेलइ। कहइ छै, 'सासु डाइन छै। हमरा डर होइए।'

आब तए बेटियो सए भेंट करय नइँ दइ छइ। होइ छइ बेटी कए लाए कए भागि जायत। अशोक मतिछिन्नू जकाँ करइ छइ। दू गोटय के दुआर पर धीयापूता कए पढ़बइ छइ। तहू मे कहियो गेल, कहियो नइँ गेल। गमहरिया वाली लग गुमसुम बइठल रहल। कुछो पुछलक तए बाजल, नइँ तए माटिक मुरूत जकाँ चुप।

गमहरियावाली ओकरा बुझबै छै, 'आइ-काल्हि के लड़की सासुर आबिते नाटक पसारि देलक। ऊ सब सए पहिने शिकायत शुरू करइ-ए। सासु, ससुर, ननदि, गोतनी आ दीअर के शिकायत। झूठ कए साँच बना कए पसारइए। अपन तकलीफ के खिस्सा गढ़इए। घरवला कए परिवार सए काटइ-ए आ ओकरा पर सवारी कसइ-ए। ओकरा जेना चाहइ-ए तेना नचबइ-ए। जँ अहाँ आइ तैयार भाए जइयौ जे ओझा मँगेबै आ माय कए नचेबइ त ऊ काल्हि चैल आयत।'

मदन सब सए पहिने अशोके अइठिन गेल। राधा ओतय नै गेल रहइ। ऊ कतौ नै रहइ। कोनो अड्डा पर नइँ।

ओइ राति मारि कूही आ थकनीक मारल कखनि नीन पड़ि गेल तकर सोह राधा कए नै रहलइ। जागल तए देह बथैत रहै आ भूख लागल रहै। सोचलक आब एतय नै रहत। तिनटोलिया चैल जायत। बुझेलै जेना भिनसर भाए गेल छै। पचबजिया गाड़ी पकड़ैतै कि नहि से नै कहि। नै भेटतै तए देखल जेतै। आब कोनो चीज सए मोह नै रहलै। ऊ जहिना रहय, तहिना विदा भाए गेल। टीशन जाइ मे एक घंटा लागतै। कोय कतौ नै। सड़क सुनसान रहै। ऊ चलैत गेल। आइ ओकरा कोनो चीज के डर नै रहै। बहुत दूर चैल गेल तए सुनलक गाड़ी पुक्की दैत रहै। जी धक सिन उठलै। भेलै कहीं गाड़ी ने छूइट जाइ। डेग झटकाइर कए चलय लागल। राधा टीशन पहुँचल तखनिए गाड़ियो एलै। ऊ डिब्बा मे चढ़ि गेल। सीट पर बैठै मे संकोच भेलै। टिकट नै रहै। डर होइत रहलै कहीं टीटी ने पकैड़ लै। ओकरा लग एक्को टा पैसा नै छै। टिकट लैत केना। आब पकड़ै या जे होइ।

तिनटोलिया जाइ तए अय मगर कोनो उत्साह नै छै। मन भारी छै। नहिरा मे के ओकर स्वागत करतै? सब कए बोझ जकाँ लागतै। मन करै छै खूब कानय। लेकिन कहुना आवेग पर काबू केलक। दुख मे डूबल गुमसुम बैठल रहल।

राधा कए देख ओकर माय के माथा ठनकलै। की भाए गेलै छौंड़ी कए। किए चैल एलै। फेर मारलकै की? नै जाइन

अइ छौंड़ी के कपार मे की लिखल छै। माय कए भरि पाँज पकैड़ राधा कानय लागल। बाप दुनू कए कानैत देखैत रहलै।

अँगना चल। हाथ-गोड़ धो। जलखै बनवै छियौ।—कहैत माय अरियाइत कए लाए गेलै।

माय रोटी पकबय लागलै। राधा आँच उसकाबैत रहल। माय खोधि-खोखि कए पूछय लागलै—की भेलौ? किए भागि एलही?

राधा बड़ी काल चुप रहल। सोचैत रहल, की कहौ। कहै वला बात छै! बाजल—बहुत मारलक-ए। आब हम ओइ घर नै जेबौ।

की भेल रहौ? किए मारलकौ?—माय पुछैत रहलै।

धुर! की रहतै! मन पपियाह छै।—राधा कए असल घटना बतबै मे संकोच भेलै। मगर माय बूझि गेलै। बाजल—बजरखसुआ कए एक्को रत्ती दरेग नै भेलै! केना कए मारल गेलै। सेहो दू-दू जीव कए।

राधा के पएर भारी रहै।

राधा कए मदन मोन पड़ैत छै तए भीतर खौंत उठै छै। घिरना होइ छै। ओकर मुँहो देखै के मन नै होइ छै। मगर करमू आ शनीचरी खातिर बड़ दुख होइ छै।

मैट्रिक पास केला पर राधा इंटर मे नाम लिखेने रहय। तकर परीक्षा के फारम भराइत छै। ओकर सखी सासुर सए अही खातिर आयल छै। कौलेज राघोपुर मे छै। सखी कहै छै—संगे-संग चल फारम भरि दही।

राधा के मन करै छै उहो फारम भरय। पढ़ि-लीखि कए कोनो नौकरी करय। लेकिन पैसा के देतै? माय-बाप सए पैसा माँगैत लाज होइ छै।

ऊ सखी कए कहइ-ए—तू जो। हम नै भरबै। पैसा नै छै। हम ककरा सए माँगबै आ के देतै?

चल काकी कए कहै छिऐ। नै देतौ तए हम देबौ।—सखी कहइ छै।

राधा चुपचाप सुनइ-ए। ओकरा कुइछ नै फुराइ छै।

'चल ने।'—सखी जिद करै छै तए उठइ-ए।

राधा के माय के हाथ पर पैसा नै छै। कहइ-ए—अखैन तू दाए दही। थोड़े दिन मे घुरा देबौ।

राधा फारम भरइ-ए आ परीक्षा के तैयारी करइ-ए। जीअइ के एगो बाट भेटला सए उत्साह एलइ-ए।

मदन तिनटोलिया गेल। लेकिन ससुर सए भेंट करै के हिम्मत नै भेलै। अगल-बगल के लोग सए पता लागि गेलै जे राधा एत्तै छै। ऊ घुरि आयल। आब टेम्पू चलबै मे मन नै लागै छै। खाइ-पिअइ के कोनो ठेकान नै रहै छै। शनीचरी अपने मोने जे भेल से बनबइ-ए। खाइ मे नीक नै लागै छै। राधा हाथक बनायल खाना के स्वादे अलग रहै। मदन कए पित्त उठैत रहैत छै। शनीचरी आ करमू पर तामस उतारैत रहइ-ए।

टेम्पो बेर-बेर भंगठि जाइ छै। ठीक करबैत-करबैत ओकर जान आजिज भाए गेलइ-ए। कहियो-कहियो तए ऊ टेम्पूओ कए लतियाबय लागइ-ए—जो सार! पड़ल रह।

मदन के मन टेम्पू सए उचटि गेलै। जतेक कमाइ नै ततेक ठीके करबै मे खरच भाए जाइ छै। टेम्पू चलेनाइ ऊ साफे छोड़ि

देलक। टेम्पू मालिक समाद पठेलकै। कतेको दिन सए भाड़ा नै भेटल रहै। मदन कहलकइ—'हे उएह पड़ल छै। कहिहक अपन लाय जेतै।'

मदन लग आब कोनो रोजगार नै छै। दिन भरि बैठल-बैठल सोचैत रहइ-ए। ओकर दिन केना चलतै? की करय। राधाक नै रहने घर छिड़िया गेल छै। माय कए कहैत रहैत छै—'बाबू कए कही तिनटोलिया वाली कए लाए आनतौ।'

लेकिन कामेसर कान-बात नै दै छै। जाइ के गर नै करइ छै। कोन मुँह लाए कए जेतै? ई छौंड़ा बेर-बेर मौगी कए कूटि दै छै।

मदन बेर-बेर एक्के बात सोचैत रहइ-ए। राधाक चालि-चलन ठीक नै छै। मन मे जे संदेह पैसि गेलइ-ए, से निकलै के नाम नै लै छै।

एक बेर राधा तिनटोलिए मे रहइ तए ओकर साढ़ू आयल रहइ। दू-तीन दिन रहलै। अंगना मे राधा जइ कोठली मे सुतै, ओही कोठलीक बाहर बरंडा पर ओकर साढ़ू सूतए। की ऊ दुनू अलगे-अलग रहैत हेतै? कुइछ नै करैत हेतै?

ई बिसबास मदन कए नै होइ छै। तहू मे राधा केबाड़ नै लगबैत रहय। खाली भिड़का दइ। ई गप राधा अपने मुँहें ओकरा कहने रहइ। आगि आ खढ़ जँ एकठाम रहतै तए धधरा नै हेतै?

फेर ओइ दिनक घटना, जहिया दुनू सिनेमा देखय गेल रहय आ ठिठिआइत रहय। दुनू मे जरूर कुइछ छै।

मदन अपना कए कतबो बुझाबय मन नइँ मानइ। माथा गरम भाए जाइ। ऊ कछमछ करैत रहि जाय।

ससुराइर मे एगो लड़का रहइ। सारे लागितिऐ। एक दिन कहलकइ—'मेहमान, राधा कए एतय किएक छोड़ने छिऐ? लाए जाइयो ने।'

मदन पुछलकै—'से किएक? की बात?'

'नै कोनो बात नै। ओहिना कहलौं। देखै नै छिऐ जमाना कतेक खराब छै! कैक टा छौंड़ा ओकर घरक चक्कर दैत रहैत छै।'—लड़का गोलमटोल जवाब देलकै। कने थम्हलै। फेर कहलकै—'जानै छिऐ, जे सुंदरता मे बड़ ऐब होइ छै?' ओकर गप मदन के माथा हौंड़ देलकै। राधा बहुत खापसूरत रहइ। तरह-तरह के शंका-आशंका ओकर दिमाग मे चकभाउर दिअय लागलै।

राधा कए कोन-कोन आदमी सए लाट-घाट छै। ककरा-ककरा सए हँसि-हँसि कए गप करइए। ककरा लग जाइ-ए। ककरा बोलबइए। कोन गप करैए। आँखि मे, मन मे के बसै छै? मदन अही सब दिआ माथ धुनैत रहइ-ए।

एक दिन बेरू पहर कए फुलेसरा कए अंगना मे ठाढ़ देखलकै। मदन कए देखिते ऊ ई कहैत निकलि गेल जे कचिया खातिर आयल रहय।

फुलेसराक ई छिच्छा मदन कए खटकलै। जरूर कोनो बात छै। राधा सए पुछलकै—'फुलेसरा कथी लए आयल रहइ?'

'हम तए घर मे रहिअइ। हम कियाने गेलिअइ के एलइ, कथी लए एलइ?'—राधा खौंझा कए कहलकै।

मदन कए ओकर बात पर बिसबास नै भेलै—'गे रंडिया हम तोहर सब खेल बुझै छिअउ। फुलेसरा ओहिना एलै? बोलेलिही, तब ने एलै?'

'धधौवा सब ओहिना धधायल फिरइ छै। जे हमर नाम लगेतै तकरा पर बज्जर खसतै।'—राधा खुखुवा उठल।

मदन कए खौंत उठलै—'ठहर बपचोदी! आइ तोरा देखा दै छियौ।'

मदन लाति-मुक्का दिअय लागलै।

राधा गहूम बीछैत रहय। झिकातिरी मे सूप उनटि गेलै आ सब गहूम माटि पर छिड़िया गेलै।

'आब बाप के लौंड़ा खइहें रे मइचोदा!'

राधाक गारि सुनि मदन कए तामसक प्रचंड लहरि उठलै। ऊ लाठी ताकय लागल। राधा बपरहाड़ि काटैत भागल। लोग जमा भाए गेलै। मदन कए पकड़ि लेलकै।

कोय नीक नै कहै छै। सब दुर छी दुर छी करै छै। लेकिन मदन लेखें धन सन। ऊ अपन बानि नै छोड़इ-ए।

जनीजाति ओकर हँसी उड़बइ छै। ओइ दिन निरमल्ली वाली कहैत रहइ—'एगो बात जानै छिऐ?'

जरौली वाली कहलकै—'नै!... कोन बात?'

'अरे, मदन तिनटोलिया वाली कए ताला लगा दै छै।'

निरमल्ली वालीक बात जरौली वाली कए नै बुझेलै। पुछलकै—'घर मे बन्न काए दै छै?'

'भक्!'—निरमल्ली वाली कए कहइ मे लाज होइत रहै।

—'अरे, घर मे नै, तर मे ताला लगाय दै छै।'

'तर मे? कोन तर मे?'—जरौली वालीक बात पर सब हँसय लागल।

आब जरौलियो वाली कए बात बुझा गेलै। ऊहो हँसय लागल। लेकिन भेलै जे ई सब चौल करइ-ए। ऊ पतियेबे ने करइ। भीतर मे ताला केना लागतै! पुछलक—'ओकरो ताला होइ छै?'

सब भभा कए हँसल।

ताला लगबै वला बात जरौली वालीक मन सए नै जाइ छै। ताला केना लगबैत हेतै? केहन होइत हेतै? ताला वला पेंट आबैत हेतै? पेंट खुलतै नै तए लोग बाहर-भीतर केना जेतै? धौर! उहो की-कहाँ सोचैत रहइ-ए।

अगिला दिन निरमल्ली वाली सए भेंट भेलै तए जरौली वालीक मन मे फेर ताला वला बात घुरिया लागलै। मन होइ पूछय। दोसर मन होइ नै, नै पूछत। पुछतइ तए सब ओकर हँसी उड़ेतै। सोचलक सब चैल जेतै, तब पूछत। लेकिन रहल नै गेलै। बाजल—'बहीन, एगो बात पूछी?'

—'कोन बात? कहू ने।'

—'वएह, जे काल्हि बाजल रहिअइ।'

—'की बाजल रहिअइ?'

—'वएह, तिनटोलिया वालीक बारे मे।'

—'की भेलै से?'

'नै-नै, भेलै कुइछ नै।'—जरौली वाली पछताय लागल। बलौ पुछलकै।

'ताला वला बात हय?'—पिपरा वाली हँसैत, पुछलकै।

'हँ ये, बहीन! ओइ मे लगाबै छै केना?'—सब हँसय लागलै।

‘धुर बकलेल! इहो ने बुझै छहक?’ पिपरा वाली हँसैत हँसैत बाजलै।

‘लट-बनहन बुझै छिऐ?’—निरमल्ली वाली बेकछैलकै।

सब भभारो हँसलै।

‘मारे मुँह, एहनो कतौ लोग भेल-ए! आइ धरि एहन अजगुत नै सुनने रहिऐ।’—जरौली वाली बाजल।

राधा कए कैक टा लड़का मोन पड़ैत छै जे ओकरा चाहैत रहइ। मौका पाबिते सहटि कए लग चैल आबइ। कोनो-कोनो गप करइ। ओकरा छूबय चाहइ। एक टा तए ओकरा लए बेर तोड़इ, जिलेबी तोड़इ, आम दइ जामुन दइ। मगर खुलि कए कहियो कुइछ नै कहइ। ने कहियो देह मे सटइ। राधा कए ऊ लड़का नीक लागै। लेकिन ऊ दोसर टोल के रहइ। आब कतय छै, केना छै; पता नै। बियाह के बाद कहियो भेंट नै भेलै।

करजाइन वला अपन बहनोइयो राधा कए पसिन छै। ओकर बात, विचार बेबहार—सब चीज बढ़िया छै। हद्दो घड़ी हँसिते रहै छै। मिठबोलिया छै। राधा कए मान दै छै। नीक-नीक गप करै छै। हँसी-चौल करै छै। दीदी लए कुछो आनलक तए ओकरो लए जरूर आनै छै। एक बेर जाड़ मे नेपाल सए बड़ सुन्नर कनटोपी आनने रहइ।

बहनोइ के सेवा-टहल राधा बड़ खुशी आ जतन सए करइ-ए।

ई सब देखि कए मदन के देह जरि जाइ छै। ओकरा राधा पर संदेह होइ छै। जहिया सए ऊ करजाइन वला संगे सिनेमा देखलक-ए, तहिया सए संदेह साँच बुझा लागलइ-ए।

ओकर दिमाग मे ऊ घटना घुरिआइत रहइ छै जे राधा अपने सुनेने रहइ। लगेलग सुतइ वला घटना। भिड़काएल केबाड़क अइ पार राधा आ ओइ पार करजाइन वला। एतेक लग रहितो दुनू कुइछ नै केने हेतइ? न्नः! ई भाइए नै सकइ-ए!...

एक राति मदन सपना देखलक। निसबद राति छै। सब सूतल-ए। कतौ कोनो आवाज नै। करजाइन वला बरंडा वला चौकी पर पड़ल-पड़ल अकानि रहल-ए। कतौ कोय उकस-पाकस करइ छै या खोंखी करइ छै कि नै। न्नः। कतौ कुइछ नै। राति सन्न-सन्न करइ छै। राधाओ के कोनो भाँज नै लागि रहल छै—सूति रहल कि जागले-ए। ऊ धीरे सए उठइए। आस्ते-आस्ते केबाड़ लग जाइ-ए। हल्के सए ठेलइ-ए। नै खुललै तए भेलै केबाड़ बन्न तए ने छै! जखैन राधा सूतय जाइत रहय तए ऊ धियान देने रहय। केबाड़ बन्न करै के आवाज नै आयल रहइ। ऊ केबाड़ कए एक बेर और ठेललक। अइ बेर कने जोर सए। केबाड़ खुलि गेलै, लेकिन कने आवाज भेलै। के छी?—राधा पुछलकै तए ऊ डरि गेल। कहलकै—हइ, हम छी। राधा कुइछ नै बाजल जेना ओकरे आस मे जागल रहल हो। तकर बाद दुनू तर-ऊपर हुअय लागल। राधा बेसी जोश मे रहय।

मदन कए बरदास नै भेलै। चिकरल—‘गय भइचोदी, ठहर!’

निन्न भक सिन टूटि गेलै। गारि के ‘ठहर’ ऊ अपनो सुनलक। देखलक घाम-पसीने तर देह थरथरा रहल छै।

इंटर के रिजल्ट निकललै। राधा कए इंटरो मे फस्ट डिविजन भेलै। कोय कहइ और पढ़। कोय कहै नौकरी ताक। ओही

समय महावीर तिनटोलिया एलइ। तिनटोलिया मे महावीर के बहीन रहइ छै। ऊ बहीन के विदाइ करबय आयल-ए। ओकरो इंटर मे फस्ट डिविजन भेल छै। ऊ सोचने-ए अपन पथरा पंचायत के प्राइमरी इसकूल मे मास्टरी लए दरखास देत। मुखिए बहाली करतै। मुखिया कहलकइ-ए—तोहर रिजल्ट नीक छौ। चाहबे तए भेटि जेतौ। तब हँ कने पैसा-तैसा लागतौ। हाकिम कए दिअ पड़इ छै।

महावीर तैयार-ए। जे चारि पाँच हजार लागतै, से देत। पनरह सौ मानदेय भेटतै। तीन-चारि महीना मे टका ऊपर भाए जेतै।

महावीर के बहीन के घर लग एगो मंदिर छै। महावीर टहलैत रहय तए राधा कए पूजा करइत देखलकै। राधा के ससुरारि पथरे मे महावीर के घर सए थोड़े हटि कए छै। ओकरा बूझल रहइ जे राधा कए फस्ट डिविजन भेलइ-ए। पथरा के टू टा लड़की इंटर के परीक्षा देने रहइ। मगर ककरो फस्ट डिविजन नै एलै। जँ दरखास देत तए राधा कए पथरा इसकूल मे मास्टरी भेट जेतइ।

राधा मंदिर सए निकलल तए महावीर ओकरा कहलकइ। राधा कए अपनो मन रहइ जे कोनो काज पकड़ि लिअ। हाथ मे दूगो पैसा एतइ। ससुरो समाद पठेने रहइ। महावीर कए कहलक—'बाबू कए कहबै मुखिया सए गप करतै।'

कामेसर सुनलक तए मुखिया लग रोज जाय लागल। नेहोरा करय—'मुखिया जी, कहुना धरा दिअउ। अहाँ चाहबै तए भाए जेतै। तिनटोलिया वालीक उद्धार करियौ। अबला के सहारा बनियौ। मदना के तए बुझले-ए। कपूत बनि गेलै। सब कुइछ बुड़ा देलकइ। ऊ कोनो लोग रहलइ! झरबानर भाए गेलै।

हम कोनो जोगाड़ करबइ। जे हजार पान सौ जुड़तै तइ लाए कए हाजिर रहब। कहुना काए दिऔ।'

कामेसरक खोशामद, नेहोरा आ मिनती मुखिया कए पघिला देलकै। एक दिन बाजल—'ठीक छै। कहक आबि कए दरखास देतै।'

कामेसर ओही दिन तिनटोलिया चैल गेल। समधि कए सब बात कहलकै। समधियो कए भेलै आब राधा के जीवन सुधरि जेतै। नहिरा मे कतेक दिन रहत। आब तए तीन गो बालो-बच्चा भेलै। इंटर के परीक्षा खतम होइते राधा कए एगो बेटी भेल रहइ।

बाबू राधा कए पुछलकै—'समैध लइ लए आयल छौ। कहै छौ ओतय माहटरी भेटि जेतौ। मुखिया सए गप भेल छै। जेबही?'

राधा कोनो जवाब नै देलकै। पथरा जायब ओकरा पहाड़ जकाँ लागै छै। घरवला के तए मुँहो देखय नै चाहइ-ए। ओकरा तए गारि-मारि छोड़ि किच्छ सूझिते नै छै। चौबीसो घंटा पहरा दैत रहइ छै। मन मे पाप भरल रहइ छै।

राधा झोंक मे आबि कए महावीरक मारफत ससुर कए समाद पठा देने रहइ। आब ससुर आबि गेलइ तए जाइ के मन नै होइ छै। कथी लए जायत? आठ चौड़ी के मारि खाए लए? सरधुआ बड़ चंडाल छै। मारय लागल तए होश नै रहइ छै जे मरतै कि जीतइ। राति कए आगि उठल तए देह मे सटि कए तंगड़ैत रहल। राधा काठ भेल पड़ल रहइए। कुछ करइ के मन नै करइ छै। जँ धकेल दइ तए ऊ मारय लागतै। तैं कठुआयल पड़ल रहइ-ए आ ऊ जबरदस्ती करैत रहैत छै।

एक टा एहनो समय रहइ जे ओकरा बड़ गुदगुदी लागै। मदन ओकरा निर्वस्त्र काए दइ। ओकर अंग-अंग कए छूबइ। नेहारैत रहि जाइ। कखनू चुम्मा लइ। कखनू गाल-मुँह रगड़इ। ओकर बुट्टी-बुट्टी फड़कय लागइ। लागइ जेना अइ सए बढ़ि कए और कोनो आनंद जीवन मे नइँ छै। लेकिन आब नइँ। आब तकलीफ होइ छै।

राधा कए होइत रहै छै कतहु भागि-पड़ा जाय। ककरो संगे उढ़रि जाय। अशोक कए नुरिआइत देखइ-ए। ओकर आँखि मे अपना लेल सिनेह देखइ-ए। ऊ मीठ बोल बोलइ छै। मान दइ छै। ओकरा बेर-बेर अशोक मोन पड़ैत रहैत छै। जँ ऊ कहि दइ तए अशोक ओकरा जंगल की आ पहाड़ की; कतौ लाए कए चैल जेतै।

राधा कए शनीचरी मोन पड़ै छै। करमू मोन पड़ै छै। कोर के दुधपीवा बच्चा कय की हेतै?

ओकरा कतय कए फेक देत?

ओकरा होइ छै जेना ओकर जिनगी कोनो महाजाल मे फँसि गेल छै आ ऊ ओही मे ओझरा कए मरि जाएत। ओहि सए निकलि नै हेतै। ओकरा वश मे कुइछ नै छै।

माय कहै छै—'चैल जो। नौकरी काए ले। धीयो-पूता पढ़ि लेतौ। घरोवला मान देतौ। हाथ पर दू गो पैसा रहतौ तए सब पुछतौ।'

राधा कए भेलै माय ठिके कहै छै। ओकर जीवन बदलि जा सकइ-ए। आकि माय अपन बोझ उतारइ लए ई सब कहै छै?

राधा पथरा चैल गेल। नौकरी धाए लेलक। जहिया शुरू

कयलक, तहिया ओकरा निन्न नै भैलै। राति भरि जागले रहि गेल। कतौ एक टा नुकायल खुशी ओकरा उत्तेजित केने रहलै। ओकर जिनगी बदलि गेल रहै। ऊ परिवर्तनक संगीत सुनैत रहल। भावी जीवन के सुखद कल्पना मे डूबि गेल। अपना लेल मदन मे आदर-भाव देखलक। आब मदन कए ओकर धाख हुअए लागलै। सम्हरि कए गप्प करइ। गारि-मारि बिसरि गेल रहय। लागिते ने रहइ जे ई वएह आदमी छिऐ जकरा मुँह सए हैदघड़ी धुइयाँ निकलैत रहइ। आब राधा कए बुझाय लागलै जेना ऊहो कोनो लोग हो। जेना ओकरो कोनो नाम, कोनो काम हो।

महावीरो कए ओही इसकूल मे नौकरी भेट गेलै। रेखा सेहो ओतहि आबि गेल। ओकरो ससुरारि पथरे रहइ आ ऊ राधाक बहिना रहय। इसकूल मे सब सए जान-पहचान भेलै। धीया-पूता कए पढ़बै मे ओकरा खूब मन लागइ। आब शनीचरी आ करमू रोज इसकूल जाय लागलै।

महीना लागलै तए मानदेय के घुनसुन शुरू भेलै। पैसा कहिया भेटतै? लोग कहइ पहिल बेर देरी होइते छै। एक बेर भेट गेल तब कोनो चिंता नै रहै छै। देर-सबेर भेटिए जाइ छै। तीन महीना बीत गेलै तए सब नवका मास्टर-मास्टरनी बेचैन भाए गेल। सब कए अपन-अपन खरचा अपन-अपन समस्या रहइ। सब छटपटाइत रहय। मानदेय चारि मास पर भेटलै। राधा कए पैंच-उधार ततेक भाए गेल रहइ जे सब पैसा दुइए-चारि दिन मे उड़ि गेलै। एतेक कम पैसा मे की हेतै! कहुना नून-तेल चलतै, बस।

जहिया एक महीना पूरा भेल रहइ, मदन तहिए सए पूछय लागल—दरमाहा कहिया भेटतै? कहियो राधा सए, कहियो

हेड मास्टर सए तए कहियो मुखिया सए पूछय लागल। मदन बहस करइ—की भेलै? किए अटकल छै? कोन औपिस मे लटकल छै? पूरा इसकूल ओकर सवाल-जवाब सए अकच्छ रहय। मदन अनेरो इसकूल के चक्कर लगबइ। ओकर ई किरदानी ककरो पसिन नै पड़इ। असल मे ऊ राधाक पहरेदारी करय। कतय-कतय जाइ छै? की-की करइ छै? ककरा-ककरा सए गप करइ छै? ककरा संगे हँसि कए बोलइ छै?

एक दिन हेड मास्टर ओकरा समझेलकै। लेकिन मदन अपन हिस्सक नै छोड़लक। हेड मास्टर कए आश्चर्य होइ छै एक टा पढ़ल-लिखल लोग एना किए करइ छै! कहियो खिड़की द कय हुलुक-बुलुक करइ छै। कहियो केलबाड़ी मे नुकायल राधाक टोह लैत रहइ छै। कहियो टिफिन के समय हाता मे घुरिआइत रहल। एहन तए मति-छिन्नू लोग करइ छै। ऊ तए तेहन नै छै। ओकर अपन गाम मे एगो रघुनाथ सहनी रहइ। ऊ सब कए कहने घुरइ—गोढ़नीक कोनो बिसबास नै! ककरो सए माँगि कए खाए लइ आ कहै—काकी, गोढ़नी के कोनो बिसबास नै। रघुनाथ निछच्छ बताह रइइ। मदन बताह नै छै। एगो जे फकड़ा छै खाली दिमाग शैतान के घर। ऊ सएह छै। पढ़ि-लीखि तए गेल, लेकिन कोनो काम नै भेटलै। दिआद सए डाह होइ। बुझाइ जे दियादे जमीन बइमानी काए कए एतेक जमा काए लेलक। दियाद सए झगड़ा करइ लए सनसन करैत रहइ-ए। सब लग ओकर खिधांस आ मजा चखेबाक गप करइ-ए।

इसकूल के बदनामी भाए रहलइ-ए। लोग शिकायत करइ छै। हँसी उड़बइ छै। मदन इसकूल मे किए नुड़िआइत रहतै? दोसरो मास्टरनी तए छै! ओइ सभक घरवला कहाँ पहरेदारी

करइ छै? आ पहरा देतै किए? बौह पर बिसवास नै छै, शक छै तए नौकरी छोड़ाय दौ। घर मे बन्न काए लिअय। लोग रंग-रंग के गप करइ छै।

एक दिन राधा पढ़बै लए गेल तए खली नै भेटलइ। औपिस मे नै रहइ। सठि गेल हेतइ। राधा महावीर कए कहलक। महावीर कोनो अलमारी पर खली राखने रहय। आनि कए राधा कए देलकै। कतौ ठाढ़ भेल मदन ई सब देखैत रहय। ओकरा भेलै महावीर कोनो चिट्ठी राधा कए देलकइ-ए। हाथ मे उज्जर सनक कागज रहइ। मदन कए छटपटी लागि गेलै। की लिखने हेतै? राति मे कतौ भेंट करइ लए?

मदन कए उक्खी-बिक्खी लागि गेलइ। कखनो घर जाय, कखनो इसकूल आबय। ऊ दृश्य माथा गरम केने रहइ। चिट्ठी लैत राधा छिनारि जकाँ मुस्की केहन छोड़ने रहय!

इसकूल सए राधा जखनिए घुरल मदन जिरह करय लागलै—'चिट्ठी मे की लिखने रहौ?'

—'कोन चिट्ठी?'

—'एह! पूछइ-ए केना अनठा कए। गै, और कोन? वएह जे यार देलकौ रहय!'

राधा कए बुझाइते ने रहइ ई कोन चिट्ठी के गप करइ छै। खौंझाइत बाजल—'हम कोनो चिट्ठी-तिट्ठी नै जानै छिऐ।'

—'हँ गे, नटंगी! हम सब बुझै छिऐ। महवीरबा चिट्ठी नै देने रहौ?'

राधा कए खली वला घटना ठेहकलै। बाजल—'हम पढ़बै लए जाइ छिऐ। कोनो कुत्ता जकाँ गूँह-मूत नै सुँघने फिरै छिऐ।'

मदन ओकर झोंटा पकड़लक—'हम कुत्ता छिऐ गे रंडी?'

'से लोग कियाने गेलौ!'—राधा केश छोड़बैत बाजल।

—'भोंसरी! बन्न कर इसकूल।'

—'केश छोड़ ने रे सरधुआ!'

मदन तेहन भुटिया कए केश पकड़ने रहइ जे छोड़िओ देला पर माथ के चमड़ी बड़ी काल भकभकाइत रहलै।

राधा ओत्तइ बैठ गेल। आँखि सए ठपठप लोर खसय लागलै।

ओइ दिन मदन कए निन्न नै भेलै। राति भरि राधाक मुस्की मोन पड़ैत रहलै। महावीर के रभसल चेहरा मोन पड़ैत रहलै। होइत रहलै इसकूल छोड़बइए पड़तै। नै छोड़ेतइ तए राधा बहसि जेतइ। नौकरी मे धाएले की छै! पनरह सय टका के नौकरियो कोनो नौकरी छिऐ। तहू मे टमपरोरी।

ओइ दिन राधाओ सूति नै सकल। साँझे जे बिछौन धेलकै, से खाइयो लए नै उठलै। रोटी पका कए शनीचरी उठबैत रहलै; भूखो लागल रहइ, लेकिन खाइ के मन नै भेलै। होइ जे खूब कए कानय। ई कोन जिनगी भेलै जे ऊ ककरो दिस ताकबो ने करय; ने हँसय ने बोलय! एतेक सक्की कतौ लोग भेल अय! नौकरी छोड़ाय देतइ तए करत की? दस-बीस टका लए बिलाउज सीयत? बट्टम लगाएत? छोट-छोट चीज लए बेलल्ला होइत रहत? ओकरा कुइछ फुराइ नै छै। जिनगी अन्हार लागै छै।

भोर मे उठल तए जगरना आ भूखक चलतए देह मे सक नै लागैत रहइ। मन भारी रहइ। तइयो भानस केलक, लेकिन खेलक नइँ आ इसकूल चैल गेल। महावीर पुछलकइ—मन ठीक नै अय की?

राधा कए भेलै जे आब ऊ कानय लागत। तैं कोनो जवाब नइँ देलक। आगू बढ़ि गेल। आइ कैक गोटय ओकरा पुछलकै—'तबियत ठीक नइँ-ए की? मुँह सुखायल देखै छी!'

राधा ककरा-ककरा कोन जवाब देत? चुप रहल। लोग बुझलक घर मे झगड़ा भेल हेतइ। रूसल हएत।

राधा देखलक कलौ बेर मे मदन इसकूलक एक चक्कर काटलक। आइ ओकरा कोनो हर्ष विषाद नै भेलै; विरक्ति आ उदासीनताक अनुभव भेलै। कोनो चीज मे मन नै लागैत रहइ।

राधाक उदासी मे डूबल चेहरा महावीर कए चकित करइत रहलै। ऊ कइएक बेर ओकर लग गेल। मन होइ जे पूछय—बात की छै? लेकिन राधा नजरि फेरि लइ। महावीर चुपचाप घूरि आबय। कतौ ठाढ़ भेल मदन देखैत रहय। राधा लग ओकर नुरियेनाइ मदन कय खटकलै। मदन के क्षुब्ध आ खिसिआयल चेहरा महावीर कय चिंतित केलकै। मदन सक्की छै। कुइछ के कुइछ सोइच लेतै।

इसकूलक बाहर केलबाड़ी छै। केलबाड़ी लग ठाढ भेला पर खिड़की बाटे इसकूलक भीतर वला भाग देखाइ छै। मदन केलबाड़ी लग ठाढ़ भेल राधाक टोह लैत रहल। पहिनो कैक बेर ऊ एना करैत रहय। आइ कोय शिकायत काए देलकै। हैड मास्टर ओकरा बोलेलकै आ पुछलकै—'एना हुलकै छिऐ किऐ?'

'हम अपन पत्नी कय देखै छिऐ। ककरो दोसर कय नै। पत्नी कय देखै सए हमरा के रोकि लेतै?'—मदन के जवाब सुनि हेड मास्टर केँ पित्त उठलै। कहलकै—'तब नौकरी कियै ने छोड़ा दै छिऐ? नौकरी छोड़ा कय घर बैसा दिअउ आ खूब देखैत रहू। इसकूल मे हुलुक-बुलुक करइ के काज नै छै।'

मदन अपमान आ क्रोध के अनुभव करइत रहल। आब नै। आब नौकरी छोड़ाइए देत।

अगिला दिन राधा इसकूल जाय लागल तए मदन रोकि देलकै—'गै, कतौ जाइ के काज नै छै! चुपचाप घर मे बैठल रह।'

राधा कान बात नै देलक। जाइते रहल।

मदन चिकरल—'सुनलिही की नै गे रंडिया!'

राधा कय डर भेलै। लागलइ जेना आबि कए झोंटा ने पकड़ि लइ। पलटि कए ताकलक। मदन के आँखि मे तामस के लपट रहइ। राधा घूरि गेल। दुख आ क्रोध मे तपैत। भेलै अगिलगौना भने भीख माँगतइ। धीया-पूता लल-बेकल हेतै तए हौ। ऊ कतेक मरत!

राधा घर बैठ गेल। आब मदन जतइ जाइ, ततइ लोग पूछय लागै—तिनटोलिया वाली नौकरी छोड़ि देलकै? की भेलै? किए छोड़ि देलकै? तूँ छोड़ाय देलहक?

पहिने लोग पुछइ तए मदन कय तामस उठइ। आब पुछइ छै तए चुप रहि जाइ-ए। माइयो-बाप बहुत बुझेलकै। लेकिन मदन पर कोनो असर नै पड़लै। आब उहौ सब चुप भाए गेल। जे मन होइ से करय। ओकरा सए के लागल रहत।

मदन के इसकूल गेनाइ आब छूटि गेलै, मगर बौअइनी नै छुटलइ। कखनू अइ दोकान पर ठाढ़ रहय तए कखनू ओइ दोकान पर। लोको ओकरा सए कन्नी काटय। एहन भंग बताह कय के मुँह लगाबय। दोकान पर मन नइँ लागइ तए घर चैल आबय। घरो पर नीक नै लागइ। राधा ने कुइछ बाजइ ने मदन कय टोकइ। कथी लए टोकत। की रहइ जे गप करत। कोनो-

कोनो काज-टहल मे लागल रहय। जे कन-साग रहइ से बनाबइ। कहियो काल शनीचरी आ करमू पर तामस उतारय। छोटकी बेटी के निमेरा करय।

जहिया सए राधा के इसकूल छुटलइ, तहिया सए शनीचरी आ करमूओ नागा करय लागल। कहियो इसकूल जाइ, कहियो नै जाइ। बाप मारै तए चैल जाइ। नै तए इएह ले, वएह ले पार। शनीचरी गाछिए गाछी बौआयल फिरय। जारनि काठी बिछय। घसवाहनी संगे गप लड़ाबय। करमुआ बकरी चरवाह संगे गुल्ली डंटा खेलाय। ढेलवाहि काए कए गाछ सए जिलेबी तोड़य, टिकला तोड़य, पोखरि मे उमकय। पढ़इ मे ओकरा एक्को रत्ती मन नै लागइ। बाप कनऐंठी दइ तए किताब लाए कए बैठय जरूर, लेकिन औंघी लागय लागइ। धुस-धुस खसय।

राधा के नौकरी छुटला सए पैसा के टाँट भाए गेलै। खेतक उपजा-वारी सए कतेक की हेतै। खरचा तए अथाह छै। धीया-पूता के कपड़ा फाटल छै। छोटकी बेटी कए कफ-सरदी बोखार होइते रहइ छइ। कतेक दवाइ करतइ। दवाइ-दारू मे छुच्छे पैसे टा लागै छै। शनीचरी कए केश मे तेल साबुन लेनाइ कतेक दिन ने भाए गेलै। आब कोनो दोकनदारो उधार दइ के गर नै करइ छै।

एक दिन राधा ई सब बात मदन कय कहलकै तए मदन उखड़ि गेलै—'गाँड़ि मराय कए दही ने!'

ओकर जरल बोल सुनि राधा कए नै रहल गेलै। बाजल—'खाली चोदइए टा के सख छौ, पालन करै के नै!'

—'दादाचोदी। देखबिही?'

राधा चुप भाए गेल। और कोनो बात कहइ के मतलब रहइ मारि खेनाइ।

एहन नइँ जे मदन कय घर-दुआर आ परिवार के चिंता नइँ रहइ। ऊ सोचइ तए रहय, लेकिन फुराइ नै जे की करय।

एक बेर भेलइ जे फेर पीसा लग जाय। गेबो कयल। अपन दुखनामा कहलकै। मगर पीसा ने बैठे लए कहलकै, ने खाइ लए। मदन भूखल-पियासल अपमानक अनुभव करैत घूरि आयल।

तहिया सए सोचइत रहइ-ए आब ककरा लग जाइ? ममहर छै। बहीन-बहनोइ छै। छोटका पीसा छै। के मदति करतै? कोय करबो करतइ की नै? कोनो ठेकान नै छै!

राधा सब चीज लए किचकिच करैत रहइत छै। रोड़ाह बोल-कुबोल सुनबैत रहैत छै। मदन कय तामस उठल। दुख भेल। राधाक सामने आब ऊ कोकनल ढेंग अइ। जे मरद एक्को पैसा के उपारजन नै करतै, तकर कोन मोल रहतै? घरनी ओकर मोजर किए देतै? मदन कए बुझाइ छइ राधा ओकरा सए नफरत करइत छै। देह पर हाथो नै राखय दइ छै। झटकि दइ छै। की ओकर मन नै करैत हेतइ? आकि यार-भतार मन भरने रहइ छै? मदन कए संदेह हुअय लागै छै। दोसर संग घुसिया कए गप करइ-ए आ हमरा ठेलइ-ए।

मदन सोचइ-ए ममहर जाइ। ऊ सभ धनिक छै। जरूर मदति करतइ। ममहर जायत तए एक-दू दिन लागि जेतै। ताबे ई खेलकड़ी कोन रंग-रभस करत, तकर ठेकान नै। गेनाइ टरैत रहैत छै। लेकिन कतेक दिन टारत? घर के हालत विकट भेल जाइ छै। सिदहा पानि बेचि कए नून-तेल आबइ छै। इएह हाल

रहलइ तए कोनो दिन सिदहो सठि जेतइ आ भूखल मरत।

मदन ममहर चैल जाइ-ए। जेठका ममा लग रहइ-ए। चारो ममा भीन भाए गेल छै। जेठका आ मझिला मास्टर छिऐ। सझिला आ छोटका खेती करैत छै। जेठके कि मझिले-इएह दुनू मदति काए सकइ-ए। मझिला ममा कतौ गेल छै। साँझ मे निचेन भेला पर ऊ जेठका ममा कए सब बात कहइ-ए। ममा गंभीर भेल पुछइ छइ—'कोनो काम किए नै करइ छिही?'

—'कोन काम करबै?'

—'काम के कमी छै? एतेक लोग काम करै छै कि नै?'

—'तूहीं कोनो नौकरी धराय दएह ने।'

—'हमरा लग कोन नौकरी छै जे धराय देबौ?'

—'कोनो। नै सरकारी तए पराइभिटे।'

ममा खौंझाय गेलइ—'नै बाबू, हमरा बूते नै हेतौ। अपने ताक। भेटि गेलौ तए ठीक, नै भेटलौ तए लोग दिल्ली-पनिजाब खटै छै ने, तोंहू खट।'

मदन निराश भाए गेल। खूब मन सए खेबो नै केलक। बड़ी राति धरि निन्न नै भेलै।

भोर उठल तए, देखलकै मझिला ममा आबि गेल छै। ओकरे लग चैल गेल। संगे जलखइ केलक। कहलकइ—'ममा बड़ खगल छिऐ। हजार-दू हजार सम्हारि दएह ने।'

ममा कोनो जवाब नै देलकै तए मदन बाजल—'ममा, हम जाइ छिअह। गाम चैल जेबइ।'

ममा जेबी सए पान सय के एगो नोट बहार काए कए ओकरा देलकै।

मदन ममा के पएर छूलक आ विदा भाए गेल। रस्ता मे सोचैत रहल अइ सए की हेतै?

मदन औनाइए। ओकरा रस्ता नै भेटइ छै। एना कतेक दिन चलतै। कतेक बेर हजार पान सय माँगि-चाँगि कए दिन बितायत। मन होइ छै कतौ भागि जाय। लेकिन भागि कए जायत कतय? करत की?

आब राधा ठोर पटपटबय लागल-ए। कुछो-कुछो बाजैत रहल। अपने सए गप करइत रहल। कखनो काल बड़बड़ाइए—इएह पपियाहा नौकरी छोड़ा देलक। ई सुनि कए मदन कए तामसक प्रचंड लहरि उठइ छै। मन होइ छै अइ मौगी कए काटि दी। तामस सए देह बिन-बिन करय लागै छै। अंगना सए सहटि कए कतौ और चैल जाइ-ए।

आब मास्टरक मानदेय बढ़ि गेल छै। पनरह सौ कए चारि हजार काए देलकइ-ए। जहिया सए एना भेलै तहिया सए राधा बेसी पछताय लागल—एह, कोन दुरमति लागलइ जे नौकरी छोड़ि देलक! मारि-गारि सहियो कए करैत रहइत तए आइ दोसरे दुनिया रहितिऐक। ऊ मदन कए उलहन दइत रहइए। ओकर खोंचारन सुनि-सुनि कए मदन गरियाबैत रहइ छै।

एक दिन राधाक दिमाग मे एगो बात एलै। छोड़ल नौकरी फेर भेटतै? ऊ महावीर सए भेंट केलक। पुछलकइ—'नौकरी फेर सए भेटि सकइए?'

महावीर कए लागैत रहइ जे ई संभव नै छै। लेकिन बाजल—'हेड मास्टर आ मुखिया सए भेंट काए कए पुछिअऊ।'

राधा इसकूल गेल। हेड मास्टर मुखिया सए भेंट करय कहलकै।

राधा सासु-ससुर कए कहलक। कामेसर मुखिया सए नेहोरा केलक।

—'आब कुच्छो नै हेतै। बहुत दिन भाए गेलै।'—मुखिया साफ नकारि गेलै।

कामेसर निराश घूरि आयल। पुतोह के लेल दुख भेलै।

महावीर सए भेंट केनाइ इसकूल गेनाइ—ई सब मदन कए पता चैल गेलइ। ओकरा भेलै राधा फेर सए अपन यार-दोस लग जाइ के रस्ता बना रहल-ए। पुछलकै—'हे गे, महवीरबा लग की रहइ?'

राधा कोनो जवाब नै देलक।

ओकर चुप्पी मदन कए लेसने जाइत रहइ। ऊ कड़कल—'गे, कुइछ पूछनो रहियौ?'

'तोरा और कुछो सूझइ छौ कि नै?'—राधा लोहछि कए बाजल।

'हँ गे, हम आन्हर आ तू बड़ आँखिवाली?'—मदन व्यंग्य केलकइ।

'ने काम, ने धंधा! हद्दो घड़ी एक्के बात घोसइत रहल!'—राधा मुँह टेढ़ काए कए बाजल।

'हरमजादी, बेसी लबलब नै कर। बड़ बहसि गेलही-ए। बहुत दिन सए ठोकइया नै भेलौ-ए। आब तोरा वएह चाही।'—कहैत मदन ससरि कए कतौ जाय लागल।

पाछू सए राधा के आवाज एलै—'अल्हू लाबि दही, ने तए हमर कोंढ खइहें।'

मदन बड़ी काल धरि मिथिलेशक दोकान पर ठाढ रहल।

ऊ पुछबो केलकइ—'कुछो लेबहक?'

मदन चुप रहल। मिथिलेश के उधारी छै। काय बेर टोकबो केने रहइ। तैं हिम्मत नै होइ छै जे कहतै अल्हू चाही।

गहिकी सभ चैल गेलै। मदन ठाढे छै। मिथिलेश फेर पुछलकै—'कहऽ ने की बात छै?'

'दू-चारि दिन मे तोहर पछिलो पैसा दाए देबह। एक सेर अल्हू दाए ने?'

मदन कए संदेह रहइ देत कि नै देत।

मिथिलेश उल्हू दाए तए देलकै, लेकिन कहलकै जे आब पछिला चुकेबहक तबे भेटतह।

कामेसर चरचित लैत रहैत छै। की घटलइ; कोन दुख तकलीफ छै। कहियो काल ककरो बाड़ी-झाड़ी सए कोनो साग-सब्जी माँगि आनलक आ राधा कए दाए देलक। अइ खातिर छोटकी पुतौह मुँह फुलेने रहइ छै।

मदन कए संदेह होइ छै। एक दिन राधा कए पुछलकइ—'की बात छिऐ? आइ-काल्हि ससुर संगे बड़ा फुसुर-फुसुर करै छिही?'

राधा कुइछ नै बाजल। ओकरा बहुत दुख भेलै। एक टा ससुरे तए छै जे, सुख-दुख बुझइ छै, तकरो नै छोड़लकै। ओकरा अबजस लगा देलकइ। भगवान केहन मति देलकै से नै जानि। ककरो दिस ताकबो केलक तए कलंक जोड़ि देलक। आब ऊ कतय रहत? केना जीयत? ऊ औनाइत रहइ-ए। अइ सए नीक जे मरि जाय।

मदन सोचइ-ए बहीन लग जाय। बहनोइ इंटर कौलेज मे पढ़बइ छै। दरमाहा नै भेटै छै। लेकिन टीसन खूब चलै छै।

मदति काए सकइ-ए। मदन के कपड़ा बहुत मैल भाए गेल छै। साबुन नै छै जे साफ करत। शनीचरी कए कहइ-ए—'जो काकी सए कनी सरफ माँगि कए ला।'

शनीचरी कए जाइ के मन नै होइ छै। काकी लुलुआ लइ छै। लेकिन बापक डर सए चुपचाप चैल जाइ-ए। काकी के मन आइ सुधरल रहइ। सरफ दाए देलकइ।

मदन कपड़ा-लत्ता साफ केलक। खूब नीक जकाँ देह-हाथ मलि कए नहेलक। जे भेटलइ से खेलक आ बहीन लग चैल गेल। सब बात कहलकै। बहीन बोललइ—'पिंकी के पपा कए कहबइ। अखैन तए एबे केलहक-ए। एक-दू दिन रहह।'

रहइ मे तए कोनो हरज नै। नीक-निकूत खायत आराम सए रहत। खाली राधा के चिंता रहइ छै। ओइ छिनरिया के कोनो बिसवास नै!

बहनोइ राजकुमार पुछलकै—'कनियाँ कए नौकरी किए छोड़ाय देलिऐ?'

'इसकूल मे दूरि भेल जाइत रहइ।'—मदन जवाब देलकै।

—'की करैत रहइ?'

—'करतै की! मास्टर सभ संगे रंग-रभस करैत रहइ।'

—'की देखलिऐ? ककरो संगे गलत काज करैत देखलिऐ?'

—'नै, से नै देखलिऐ।'

—'तब?'

—'हँसी-ठट्ठा करैत रहइ।'

—'हँसी-ठट्ठा के नइँ करइत छै। ई कोन बेजाय बात भेलै?'

—'रभसल जाइत रहइ।'

—'से केना बुझलिऐ जे रभसल जाइ छै?'

—'बुझबै कोन चीज यौ। आँखि सए देखलिऐ। कनखी-मटकी देखलिऐ। चिट्ठी-पुरजी देखलिऐ।'—मदन खौंझायल जाइत रहय।

—'चिट्ठी मे की लिखल रहइ?'

—'अहूँ केहन गप करइ छिऐ! चिट्ठी हमरा देतै पढ़इ लए?'

—'नै, नै। हमरा भेलै चिट्ठी पकड़ने हेबै।'

—'नै यौ, बड़ छहत्तरि छै।'

—'ओना जे कहियौ। हमरा नइँ लागइए जे ऊ ओहन छै। अहाँ बलौ संदेह करइ छिऐ।'

—'बलौ नै। देखइ छिऐ, गमइ छिऐ; तैं करइ छिऐ।'

—'ई सब अहाँ के भरमो तए भाए सकइ-ए?'

—'भरम नै। असलियत छिऐ, असलियत।'

—'ओना संदेह के कोनो जड़ि-मूड़ी नै होइ छै। संदेह अमरलत्ती छिऐ जे बिन जड़ि के बढ़इ छै आ सौंसे गाछ छापि लइ छै। अहूँ के हाल सएह-ए। एक टा नीक लोग कए बदनाम करइ छिऐ। ई तए वएह इए जे एतेक गज्जन सहियो कए परतिष्ठा बचेने-ए। दोसर तए उढ़रि गेल रहइत।'

—'हँ, आब उढ़रनाइए बचल छै।'

—'अहाँ नै बुझइ छिऐ। ऊ अहाँ सए प्रेम करइ-ए।'

—'खूब की। प्रेम रहइ छै तए लोग झगड़ा करइ छै, गारि

दइ छइ, सरापइ छै! अरे ऊ एक नम्मर के नट्टिन! जरल-जरल बात कहैत रहत। ओकरा तए हम देखेबइ ने!'

मदन तनाव मे रहय। ऊ गप्प नै करय चाहैत रहय। रामकुमारो चुप भाए गेलै।

रामकुमार कए भेलै संदेह ओइ दुनूक जीवन कय नरक बना देलकइ-ए। ऊ कतबो बुझेतइ मदन नै बुझतै। संदेहक कोनो इलाज नै छै। संदेह जहर छिऐ जे धीरे-धीरे पसरइ छै आ एक दिन भस्म काए दइ छै।

रामकुमार सोचइ-ए की ठीके राधा बदचलन छै? ऊ कैक गोटय सए ओकर चालि-चलन दिआ पुछलकै। सब नीके कहइ छै। ओकरा अपनो सएह बुझाइ छै। मदन एक टा निर्दोष कए सजा दाए रहलइ-ए।

लोग कहै छै प्रेम एक्के गोटय सए होइ छै। बेसी गोटय सए प्रेम करब, प्रेम नै वासना छिऐ। की प्रेम गिनती छिऐ?

रामकुमार कए हँसी लागइ छै। मन होइ छै मदन सए चौल करय। ओकरा कहइ जे प्रेम भूख छिऐ। ककरो एक संझा भूख रहै छै; ककरो फुलिया भूख। जँ अहाँ पेट नै भरबै तए ऊ मुँह मारने घुरत। लेकिन ई कहला पर मदन आगि भाए जेतै। तैं कुच्छो नै कहइ-ए।

प्रेम की छिऐ? रामकुमार सोचइ-ए। ओकरा बुझाइ छै जे प्रेम देह के धर्म छिऐ। बिना देह के प्रेम नै भाए सकइए। अमूर्त प्रेम सनक कोनो चीज नै होइ छै। प्रेम आ सौंदर्य के अनुभूति तए तकरे लेल हेतै, जे छै।

ओकरा होइ छै मदन भ्रम मे जीबइ-ए। सत्य कए चिन्हइ नइँ-ए। तैं बेचैन रहइ-ए।

अइ बेर बहीन लग रहइ मे मदन कए मन नै लागलै। राधा किए नौकरी छोड़ि देलकै?—सब के एक्के सवाल रहइ। आब ओइ बात कए ऊ बिसरय चाहइ-ए। कोय पुछलक तए झरकी उठइ छै। आबैत काल पान सय टका दैत बहीन कहलकइ—'अखैन हाथ पर पैसा नै छै। एतबे राखि लएह।'

मदन चैल देलक। घर पहुँचल तए देखलक राधा बिछौन धेने छै। कहाँदन मटिया तेल ढारि कए देह मे आगि लगाय लेने रहइ। ऊ जहिया गेल तहिए ई कांड भेलै। रच्छ रहइ जे कामेसर तुरते देखि गेलै आ कम्मल सए झाँपि कए आगि मिझेलकइ। झटपट अस्पताल लाए गेलइ। आइ-ए एलइ-ए। बचि गेलै। बेसी नै झरकलै। कामेसर बड़ जतन सए देखभाल केलकइ।

कामेसर जे राधा के सेवा केलकइ, से मदन कए खटकलइ। एतेक खटइ के ओकरा कोन बेगरता रहइ? कोनो बौह रहइ की? दुनू मे जरूर कोनो लटपट छै।

मदन बहीन लग जाइत रहय तए राधा भनभनाइत रहइ—ई अगिलगौना हमरा घरो मे नै रहय देत। ससुरो-भैंसुर कए नै छोड़लक। आब हम नै जीयब। आगि लगा लेब तबे एकर करेज ठंढा हेतै।

मदन कए भेल रहइ राधा ओहिना बड़बड़ाइ छइ; नाटक करइ छै। ऊ धियान नै देलक; चैल गेल। आब घूरि कए आबि गेल तए होइ छै इहो नाटके रहइ। नाटक नइँ रहितिऐ तए मरि गेल रहइत। एतेक मामूली झरकनाइ नाटक नै तए की छिऐ? मन भेलइ एक लात दइ। एक्के लात मे सब भाभट निकलि जेतै। लेकिन तखनिए ओकर माय आबि गेलै आ राधाक घा

पर मलहम लगबय लागलइ। घा ठीक होइ मे एक पख लागि गेलइ। राधा कए कमजोरी बहुत छै। होइ छै सुतले रही।

मदन कए तामस उठैत रहैत छै। ई मौगी घर बरबाद काए देलकइ। जे हो पैसा आनने रहय सेहो दवाइ-दारू मे भुरकुस्सा भाए गेलै। आब नून-तेल केना चलतै! कोनो दोकनदार उधारी नै दइ छै। सभक कुइछ ने कुइछ धारने छै।

मदन कए कतौ मन नै लागै छै। ने घर मे ने बाहर मे। राधा एकदम्मे ने सोहाइ छै। जहिना घर आयल आ ओकरा पर नजरि पड़ल तए झरकी उठइ छै। ओकरा बरदास केनाइ कठिन बुझाइ छै। घर सए निकलि जाइ-ए। अइ दोकान ओइ दोकान पर ठाढ होइ-ए। कखनू कोनो बिरिंच कोनो मचान पर बैठ जाइ-ए। कखनू ताशक खेल देखइ-ए। थाकि गेला पर दुआर परक चौकी पर पड़ि रहइ-ए।

आब ककरो सए कुइछ माँगइ के मन नै करइ छै। ने कतहु जाइ के मन करइ छै। कोय कुच्छो दिअय नै चाहै छै। कोय मान नै दै छै। सब अभेला करइ छै। करमुआ कए बोखार लागल छै। एगो गोली लाबि कए देलकै। बोखार उतरलै। लेकिन आइ फेर भाए गेलै। डाक्टर कए देखाबय पड़तै। घर मे एक्को टा पैसा नै छै।

कुइछ नै फुरै छै की करय। मौगी खोंचारैत रहैत छै।—'ई भकलोलबा छौंड़ा कए मारि देतै! अस्पताल लाए जेतै से नै। अइ दुआरि, ओइ दुआरि लोगक गाँड़ि चाटने घुरइ छै।'

मदन के मन करइ छै मौगी कए डेंगाय दइ। लेकिन मरमसि कए रहि जाइ-ए।

कामेसर छौंड़ा कए लाए जाइ छै। डाकदर कए देखबै

छै। दवाइ दै छै। राधा लेल टॉनिक कीनै छै।

ओकर बाप ओइ दुनू लए एतेक चिंता किए करइ छै?—मदन सोचैत रहइ-ए। ओकर संदेह पक्का भेल जाइ छै। दुनू मे जरूर गड़बड़ छै ओकरा खीस उठइ छै। होइ छै बुढ़बे कए काटि दी।

सिदहा बेचि-बेचि नून-तेल किनाइत रहलइ-ए। घर मे आब चाउर नइँ छै। सब सठि गेलइ। दू दिन सए रोटीए खाइए। धीया-पूता भात-भात हल्ला करइ छै। राधा कहइ छै—'पिपराही वाली दीदी सए चाउर लाए ने आबौ।'

मदन कए तामस उठलइ—'ई मौगी हमरा खेखनी करइ लए भेजइ-ए।'

'अइ मे कोन खेखनी भेलइ। ऊ कोनो आन छिऐ? सर-कुटुम होइ छै कथी लए? एतनो मदति ने करतइ!'

राधा जोर दइ छै।

ई मौगी ठेलिया कए किए पठबइ-ए? की बात छिऐ? मदन कए शंका होइ छै। कहइ-ए—'ठीक छै। जाइ छियौ। लेकिन सुनि ले। नै देलकौ तए तोरे काटि देबौ।'

राधा कोनो जवाब नइँ देलक। मदन पिपराही चैल गेल। दीदी कए कहलकै—'हमरा पचीस-तीस किलो चाउर दे। साइकिले पर लादि लेबै। कहबिही तए अगहन मे घुरा देबौ।'

'अच्छा, एक दिन रुकि जो। काल्हि दाए देबउ।'—दीदी बाजलै।

अगिला दिन खायल-पीयल भाए गेलै तए मदन जाइ लए तैयार भेल। दीदी कहलकइ—'आइ नइँ, काल्हि जइहैं।'

ऊ कहुना जी जाँति कए रहि गेल। ओकरा छटपटी लागल रहइ। अगिला दिन भोरे उठल। दीदी पाँच किलो चाउर देलकै। मदन कए रीस उठलै। कहलकै—'अही लए दू दिन सए रोकने रही? राख, राख। अपन चाउर राख।' ऊ हकासल-पियासल छुच्छे हाथे चैल देलक। हाँय-हाँय साइकिल मे पैडिल मारैत एक सुर मे चलैत रहल।

तामसे मन घोर भेल जाइत रहइ। एक्के टा बात दिमाग कए हौंड़ैत रहइ—खाली ई मौगी केलक। बुढ़बा भतार लग सूतइ खातिर बैलाय देलक। बुरचोदी कए आइ नै छोड़बइ। काटि देबै।

ऊ घर पहुँचल तखनि दुपहर भेल रहइ। रौद मे देह तपि गेल रहइ। साइकिल सुखदेबा के रहइ। ततेक पितायल रहय जे घुरबइ लए नै गेल। अपने टाट पर औंघरा देलक। अंगा खोलि घाम पोछलक आ ओकरा टाट पर फेकि देलक। घर ढुकल तए राधा पर नजरि पड़लै। बाजल—'ठहर बपचोदी! काटिए दइ छियौ।'

'के रोकइ छौ, काटि दे!'—राधा विरक्त भेल बाजल। ओकरा जिअइ के कोनो उत्साह नै रहइ।

मदन दबिया ताकय लागल। भेटइ मे देरी भेलै तए चिचिआयल—'भोंसरी, कतय नुका देलही?'

राधा कए कमजोरी बुझाइत रहइ। जा कए बिछौन पर पड़ि रहल। बापक हाथ मे दबिया देखि शनीचरी कए डर भेलै। दौड़ कए बापक गट्टा पकड़लक आ कलपय लागल—'माय कए नै मारहक हौ पप्पा।'

मदन दबिए वला हाथ सए शनीचरी कए ठेललक—

'ठहर, तोरे काटि दइ छियौ।' शनीचरी कए दबिया के नोक लागि गेलै। पखुड़ा सए बलबल खून फेकय लागलै। ऊ कानैत पड़ायल। मदन पर खून सवार भाए गेलै। राधा आँखि मुनने पड़ल रहय। मदन समधानि कए छओ मारलक। राधाक गरदनि कटि गेलै। खून के पमारा निकललै। खूनक टघारे टघार।

मदन के पूरा शरीर उत्तेजना सए थरथराइत रहइ। ऊ बैठ गेल। दुनू हाथ सए माथ पकड़ने बैठल रहल। घामे-पसीने नहाय गेल।

हल्ला उठलै—जुलुम भाए गेलै। मदना बौह कए काटि देलकै। लोग टूटि पड़ल। करमान लागि गेलै। मूड़ी धड़ सए अलग नै भेल रहइ। कनी टा लागल रहइ। लेकिन राधा मरि गेल रहय।

मदन निकलि गेल। सुनसान बाधक रस्ता धाय लेलक। कतौ-कतौ एक-आध टा जनीजाति सूंग के खेत सए घुरैत रहै। मदन देखय तए दूरे सए रस्ता काटि लिअय। ऊ खाली फुलपेंटे टा पहिरने रहय। गंजियो नै रहइ। फुल पेंट पर खून के छिटका पड़ल रहइ। ऊ धार मे धँसि गेल। छिटका धोलक। धारक भित्ता पर अभड़ मे बैठि कए देह-हाथ सुखेलक। मन मे डर समाय गेल रहइ। बेर-बेर घूरि कए ताकय। कोय आबइ तए नै छै!

अखैन जइ भेस मे ऊ अय, तइ मे लोग बताह बुझतै। अइ भेस मे कतौ जाइयो ने सकइ-ए। धारक बगल मे जे गाम छै, ओतय एक गोटय ओकरा चिन्हइ छै। ऊ ओत्तहि चैल गेल। घरबइया तखनिए सिपौल सए आयल रहइ। बाजल—'अरे बा! तू एतय छहक? तोरा तए पुलिस ताकइ छह। एतय सए तुरंत निकलि जाह।'

पुलिस के नाम सुनिते मदन कए अदंक समाय गेलै। कहलकइ—'हमरा एगो फाटल-पुरान लुंगी आ अंगा दएह।'

मदन जल्दी-जल्दी कपड़ा फेरलक आ विदा भाए गेल।

घरबइया बाजल—'ई फुलपेंट एतय नै छोड़हक, ने तए हमरे सब कए पकड़ि लेत।'

मदन पेंट उठेलक आ नुड़ियाबैत चैल देलक। सोचलक बरूआरी जा कए गाड़ी पकड़ि लेत। ऊ फेर बाधक रस्ता धेलक। सड़क देने जाइ मे पकड़ाइ के डर रहइ। बाध मे एगो पोखरि रहइ। मदन पेंट कए पोखरिक कात थाल मे गाड़ि देलक। हुलिया बदलि गेला सए ओकर डर कने कमलइ। लेकिन ओकरा संग मे एक्को टा पैसा नै रहइ। टिकट केना कटायत? बिना टिकट के पकड़ायल तए इहो भंडा फूटि जेतइ।

बरूआरी टीशन देखाय लागलइ। और आगू गेल तए एक गोटय कए अपन दुआर पर बैठल देखलक। बुझेलइ जेना अपन स्त्री संगे गप्प करैत हो। मदन ओकरा गौर सए देखलक। ऊ ओकर इसकूल के संगी रहइ। संगी मदन कए नै चिन्हलकै, से नीक भेलै। ऊ स्वांग केलक। बाजल—टीशन पर बैठल-बैठल ओंघाय गेलिऐ। कोय झोरा उठा लेलकै। सहरसा जेनाइ छै। टिकट के पैसा नै छै। फाजिल नइँ हमरा टिकटे जोगर पैसा चाही। भेटि जेतइ तए बड़ उपकार मानब। बस टिकटे भरि। एक्को पैसा बेसी नइँ लेब।

ओइ दुनू कए आश्चर्य लागलइ। स्त्री कहलकइ—'दाए दिऔ। बेचारा मोसीबत मे छै।'

खुदरा नइँ रहइ। बिसटकही देलकइ तए मदन नै लेलक। बाजल—'हमरा पाँचे टका चाही।'

संगी कहलकइ—'जा ने, जलखइ-तलखइ खाय लिहह।'

—'नै हमरा पाँचे दिअ।'

संगी कए खीस उठलइ। बाजल—'बुड़बक आदमी, हम भजबइ लए बौआयल घुरबइ! लेबह कि नै?'

मदन बिसटकही लाए लेलक। गाड़ी मे अंगुरी सन-सन हथबत्ती बिकाइत रहइ। मदन दस टका मे एगो किनलक। भेलै जे नै जानि राति-बेराति कोन बाध-बोन टपय पड़य कोन नै। ओइ काल ई काज देत। सहरसा पहुँचल तए बड़ जोर भूख लागल रहइ। तीन टका के खेलक। दू टका जे बचलै, से लाए कए टिकट खिड़की लग गेल। दू टका राखि देलक आ हाथ जोड़ि कए प्रार्थना केलक—'सर हमरा लग एतबे पैसा छै। राम पुर हॉल्ट जेबइ। हमरा पर किरपा करियौ। एगो टिकट दाए दिऔ, सर। हमरा और कुच्छो नै चाही।'

ऊ कल जोड़ने ठाढ़ रहल। टिकट बाबू कए दया आबि गेलै। जेबी सए पाँच टका निकालि काउंटर पर राखलक आ टिकट दाए देलकै।

ओकर गाड़ी एक बजे राति मे खुलितिऐ। लागल रहितइ तए ऊ गाड़िए मे बैठ गेल रहइत। तीन-चारि घंटा और लागतइ। ऊ चौकन्ना रहय। कखनू एनय ताकए, कखनू ओनय ताकय। डर लागल रहइ कोय देखि ने लइ। एगो पुलिस ओकरा चुकुर-भुकुर करैत देखलकै। संदेह भेलइ ई जरूर कोनो चोर-उचक्का छिऐ। पुलिस लग गेल आ पुछलकइ—'कहाँ जाना है?'

मदन के कलेजा धक्क-धक्क करय लागलइ। कंठ सूखि गेलै। बाजले ने होइ। मुँह फर-फर करइ। कहुना टीशन के नाम लेलक।

पुलिस पुछलकइ—'टिकट है?' मदन टिकट देखेलकइ। आब ओकर डर कमल जाइत रहइ।

पुलिस ओकरा बहुत गौर सए देखलकइ आ बाजल—'एतना चुकुर-भुकुर काहे करता है?'

'और संगी-साथी है। उसी को खोजते हैं।'—मदन जवाब देलक। पुलिस चैल गेल।

रामपुर हौल्ट पर गाड़ी नै रुकै छै। ओना छौंड़ा सभ भेकम काए कए उतरि गेल। मदन केना उतरत? ऊ जाय कए एगो डरेवर के पएर पकड़ि लेलक—'जरा रामपुर हौल्ट पर धीरे कर दीजिएगा। हम दौड़ के उतर जाएँगे।'

'ठीक है। इंजन के पीछे वाले डिब्बे मे बैठ जाओ।'

आ ठीके डरेवर गाड़ी रोकि देलकै। मदन कूदि कए उतरल आ कल जोड़ि कए ओकरा परनाम केलकइ। रेल के सिपाही गरजलइ—'कौन है? रुको।'

डरेवर कहलकै—'अपना आदमी है।'

सिपाही चुप भाए गेल।

रामपुर मे मदन के मामक ससुरारि छै। ई ओकरा सब सए सुरक्षित जगह बुझेलइ। एतय कोय नै एतइ। ई सभ दबंग छै। सब डरइ छै। ममा के मझिला सार तए अपराधी सभक सरदार छिऐ।

पहिने ऊ ममाक जेठका सार लग गेल। सब घटना बतेलकै। जेठका के कनियाँ डरि गेलै। बाजल—'नै-नै। एतय नै रह। हम सभ फँसि जायब।'

मझिलो ओत्तहि रहइ। बाजलै—'कत्तौ नै जेतइ। एकरा हम राखबै।'

मदन मझिलाक घर पर चैल आयल। मझिला कहलकै—'कोनो पुलिस वला नइ एतइ। तूँ डर नइँ। निचिंत भाए कए रह।'

मझिला दुनू परानी जइ कोठली मे सुतय, तकरे सटल कोठली मे ओकरा राखलक। मदन कए डर होइत रहइ। मझिला कहलकइ—'डर हेतौ तए अइ खिड़की देने हाक दीहय।'

एक टा खिड़की दुनू कोठली मे खुलैत रहइ।

ऊ दुनू सूतय चैल गेलै। मदन असकर पड़ि गेल। ओकरा डर पैसि गेलइ। निन्न नइँ होइ। रहि-रहि कए राधाक कटल मूड़ी मोन पड़इ। आँखि मे खूनक धार चमकइ। बुझाइ जेना पुलिस पकड़इ लए आबि रहल हो।

—'ममा हौ!' मदन चेहा उठल।

मझिला दौड़ कए एलइ। देखलकइ मदन घामे-पसीने नेहायल-ए। पुछलकइ—'की भेलौ?'

'हमरा डर होइए।'—मदन के धड़कन बढ़ि गेल रहइ।

मझिला अगरबत्ती जराय कए कहलकइ—'डर नै। कुछो नै हेतौ। हम छिऐ ने।'

मझिला कनी काल बैठल रहलइ। कहलकइ—'मन कए स्थिर कर। सूति रह।'

मझिला चैल गेलइ। मदन सूतइ के कोशिश करय लागल। बड़ी काल के बाद आँखि लागलइ। देखइ-ए राधा बगल मे ठाढ़ छै। उज्जर साड़ी पिन्हने छै। अँचरा सए माथ झाँपने छै आ खूँट कए गला मे लपेटने छै। मूड़ी झुकेने चुपचाप ठाढ़ छै। आँखि आधा खोलने नीचाँ ताकि रहल छै। शांत। स्थिर।

राधा एतय केना चैल एलै। डर सए मदन के निन्न टूटि गेलइ। ओकर अंगा घाम सए बोदल रहइ।

'ममा!'—ऊ मझिला कए हाक देलक। अइ बेर ऊ दुनू परानी एलइ। पुछलकै—'की भेलौ?'

'हमरा बहुत डर होइए। हम असकर नै रहबह। तिलटोलिया वाली कए साक्षात देखलिऐ। ऊ आयल रहइ।'—मदन के देह सिहरि गेलइ।

'हनुमान चलीसा के पाठ कर। डर भागि जेतौ।'—मझिला कहलकइ।

मझिला के कनियाँ राम नाम के जाप करय लागल। मझिला फेर अगरबत्ती जरेलक।

मदन कए हुनुमान चलीसा मोन नइँ रहइ; ने मन थिर रहइ।

मझिला दुनू परानी बड़ी काल धरि बैठल रहलइ। दुनू कए ओंगही लागय लागलइ। मझिला कहलकइ—'कलमच पड़ि रह। भगवान के नाम लैत रह। सूतइ के परियास करही।'

ऊ दुनू अपन कोठली मे चैल गेल।

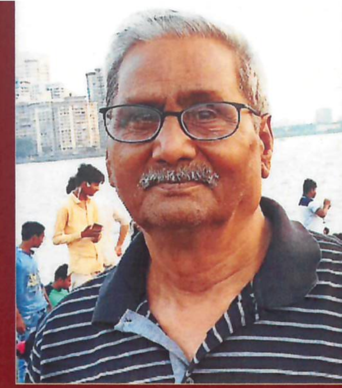
मदन सोचैत रहल, राधा किए आयल रहइ? उज्जर साड़ी किए पिन्हने रहइ? उज्जर साड़ी तए विधवा पिन्हइ छै। साड़ी के खूँट गला मे किए लपेटने रहइ?

ओकरा कुइछ बुझाइत नइँ रहइ। अही चिंता मे पड़ल-पड़ल कखनू आँखि लागि गेलइ। देखइ-ए राधा फेर आयल छै। उज्जर नूआँ पहिरने। गला मे खूँट लपेटने। कुइछ बाजइ नइँ छै। चुपचाप ठाढ़ छै।

मदन के निन्न टूटि गेलइ। बुझेलइ जेना राधा सद्य: ठाढ हो। ओकर छाती भाथी जकाँ चलय लागलइ। घाम सए भीज गेल। राधा कतौ नइँ छै। लेकिन ओकरा बुझाइ छइ राधा सामने ठाढ़ छै।

श्वेत वसना राधा।

•••



सुभाष चंद्र यादव

सुभाष चंद्र यादव मैथिलीक विख्यात कथाकार छथि। ओ हिंदी के प्रोफेसर छलाह। ओ अनेक भाषाक जानकार छथि। मैथिली, हिंदी, बांग्ला तथा अंगरेजी मे हुनका द्वारा कयल गेल अनेक अनुवाद प्रकाशित अछि। मैथिली आ हिंदी मे हुनक अनेक पुस्तक प्रकाशित छनि। हुनका कतेको प्रतिष्ठित सम्मान भेटल छनि।

संपर्क : वार्ड नं. 16, सुपौल 852131 बिहार

स्त्री–पुरुष प्रेम करइए। सुंदरता पर आसक्त आ मुग्ध होइए। निरंतर कामदग्ध होइत रहइए। विषय मे निर्बाध गमन करय चाहइए। नैसर्गिक प्रेम आ सौंदर्य के पान करय चाहइए।

लेकिन दुनिया के रीत अलग छै। ओतय प्रेम छै त' घृणो छै। एकनिष्ठता छै त' अन्यगमन सेहो छै। सुंदरता छै त' कुरूपता छै। अविश्वास आ संदेह जीवन कए केना भस्म करइ छै, ई उपन्यास तकरे खिस्सा कहइए।



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 100/-

ISBN 978-81-951827-8-7

